"प्राचीनकाल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान"

पी.के. विश्वविद्यालय शिवपुरी (म.प्र.)से

इतिहास विषय में

पीएच.डी उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

शोध निर्देशिका

डॉ.निधि तिवारी

सहायक प्राध्यापिका इतिहास विभाग

स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय

झाँसी (उ.प्र.)

सह. शोध निर्देशिका

प्रो. डॉ. महालक्ष्मी जौहरी

समाजशास्त्र विभाग

पी.के.विश्वविद्यालय,

शिवपुरी (म.प्र.)

HOD
Department of Sociology
P.K. University
Shivpuri (M.P.)

दीपक कुमार शर्मा

शोधार्थी

दीपक कुमार शर्मा

Enrollment No. 161595916265

सत्र– 2023

Scanned with OKEN Scanner

डॉ.निधि तिवारी
सहायक प्राध्यापिका

इतिहास विभाग
स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय
झाँसी (उ.प्र.)

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि दीपक कुमार शर्मा ने **"प्राचीन काल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान"**शीर्षक पर मेरे निर्देशन में शोध प्रबन्ध पूर्ण किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की सामग्री मौलिक है यह पूर्ण या आंशिक रूप से किसी परीक्षा के लिये प्रयोग नहीं की गई है। यू.जी.सी. विनियम 2018 के अनुसार शोधार्थी का शोध कार्य किसी अन्य शोध प्रबन्ध की अनुकृति नहीं है।

इन्होंने मेरे निर्देशन में 240 दिन से अधिक उपस्थित होकर शोध कार्य पूर्ण किया है।

मैं संस्तुति करती हूँ कि यह शोध प्रबन्ध इस योग्य है कि मूल्यांकन हेतु विश्वविद्यालय को प्रस्तुत किया जाये।

डॉ.निधि तिवारी
सहायक प्राध्यापिका इतिहास विभाग
स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय,
झाँसी (U.P.)

Scanned with OKEN Scanner

घोषणा–पत्र

मैं घोषणा करता हूँ कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मेरे स्वंय के द्वारा किया गया वास्तविक कार्य है, यह कार्य मैंने डॉ.निधि तिवारी के मार्गनिर्देशन में सम्पन्न किया है। यह शोध प्रबन्ध 2019 से 2023 अवधि तक शोध निर्देशिका डॉ. निधि तिवारी के निर्देशन में मेरे द्वारा लिखा गया है। मैंने शोध केन्द्र पर शोध निर्देशिका के पास 240 दिवसों से अधिक की उपस्थिति दर्ज कराई है।

मैं यह घोषणा करता हूँ कि मेरी पूर्ण जानकारी के अनुसार शोध प्रबन्ध में कोई ऐसा भाग नहीं है जो इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य विश्वविद्यालय में बिना उचित दृष्टांत प्रस्तुत किया गया हो।

दिनांक 12-07-2023
स्थानः– थनरा शिवपुरी (म.प्र.)

दीपक कुमार शर्मा
शोधार्थी
दीपक कुमार शर्मा
पी. के. विश्वविद्यालय
शिवपुरी (म.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

FORWARDING LEETER OF HEAD OF INSTITUTION

The Ph.D. Thesis & entitled "प्राचीन काल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान" Submitted by Deepak Kumar Sharma is forwarded to the University in six copies. The candidate has paid the necessary fees & their are no dues outstanding against his.

12/07/23

HOD
Department of Art
P.K. University
Shivpuri (M.P.)

Name. Prof. Dr. Mahalaxmi Jain

Date ..12/7/23.....

Place...Shivpuri M.P.

Signature of Supervisor

Date:....12/7/23.....

Place: Shivpuri M.P.

Seal.....

Signature of head of Institution where the candidate was registered for Ph.D. Degree

Address:- ..Shivpuri M.P.

Scanned with OKEN Scanner

आभार

सर्वप्रथम मैं ज्ञान की देवी **माँ सरस्वती** एवं देवों में प्रथम **श्री गणेश जी** वंदना करता हूँ। जीवन में किसी भी बड़े कार्य को क्रियान्वित करने के लिये व्यक्ति को मेहनत व मजबूत इच्छा शक्ति के अतिरिक्त अन्य लोगों की आशाऐं प्रेम एवं सहायता की भी आवश्यकता होती है। ताकि लक्ष्य प्राप्ति आसानी से हो सके।

इसके बाद मैं अपने पिता जी जो मेरी स्मृति स्मरण एवं प्रेरणा देने वाले स्वर्गीय **श्री श्यौदान सिंह** के प्रति ऋणी रहूँगा जो मेरे शोध कार्य में प्रेरणादायक रहे, मेरी जन्मदात्री माता जी श्रीमती **कश्मीरी देवी** का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझपर प्रत्येक समय अपना आर्शीवाद बनाये रखा उन्होंने मुझे कभी भी निराश नहीं होने दिया और आर्शीवाद के द्वारा आगे बढ़ने के लिये मुझे हमेशा प्रेरित किया, मैं अपनी धर्मपत्नी **श्रीमती अनीता शर्मा** का भी तहेदिल से आभार वयक्त करता हूँ जिन्होने मेरा हर समय साथ दिया और मेरी प्रेरणा बनी रही।

इसके बाद मैं पी.के. विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति **श्री जगदीश शर्मा** जी एवं माननीय कुलपति **प्रो. डॉ. रंजीत सिंह** प्रशासनिक निर्देशक **जितेन्द्र मिश्रा,** कुल सचिव **डॉ.दीपेश नामदेव** संकाय अध्यक्ष **प्रो. जी. पवन** रिसर्च डीन, **डॉ. भास्कर नल्ला** के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग से मेरा शोध कार्य पूर्ण हुआ।

शोध प्रबन्ध की मैं बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका शोध निर्देशक व सह शोध निर्देशक की होती है। मेरी शोध निर्देशिका **डॉ.निधि तिवारी** व सह–शोध निर्देशिका **प्रो. डॉ.महालक्ष्मी जौहरी जी** का मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद मुझे मिलता रहा है। जिनका मैं आजीवन ऋणी रहूँगा, इन्ही के कुशल निर्देशन से प्रस्तुत शोध प्रबंध अंतिम रूप ले पाया इनके अमूल्य सुझावों, सहयोग आदि का मैं सदैव ऋणी रहूँगा।

और अन्त में मैं पी.के.विश्वविद्यालय के **डॉ.सतनाम सिंह** व **डॉ.संदीप सारस्वत जी** के मेरे प्रति किये गये सहयोग के लिये हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

Scanned with OKEN Scanner

मैं सभी लेखकों तथा ज्ञात–अज्ञात सहयोगियों का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनके सहयोग से यह शोध कार्य सम्भव हो सका।

शोधार्थी

दीपक कुमार शर्मा

दीपक कुमार शर्मा

Scanned with OKEN Scanner

P.K.University
Shivpuri (M.P.)

Enrolment Number 161595916265

Select Course Ph.D. in History (Course Work)

Select Semester 1

Result

Enrolment Number : 161595916265

Candidate Name : DEEPAK KUMAR SHARMA

Father's Name : SHEODAN SINGH

Mother's Name : KASHMIRI DEVI

Course : Ph.D. in History (Course Work)

Year/Sem : 1

Session : 2017-18

Subject Name	Internal T	Internal T	Internal P	Internal P	External T	External T	External P	External P	
Research Methodology	N/A	N/A	N/A	N/A	50	41	N/A	N/A	41 / 50
Subject Specialization	N/A	N/A	N/A	N/A	100	69	N/A	N/A	69 / 100

Marks Obtained 110 Result Pass Max Marks 150

- Student must pass in Theory and Practical separately.
- For pass the candidate is required to obtain 40% marks in each paper and 50% marks in aggregate.
- For pass the Ph.D candidate is required to obtain 65% marks in aggregate.

Scanned with OKEN Scanner

P.K.UNIVERSITY
SHIVPURI (M.P.)

UniversityEstablished Under section 2F of UGC ACT 1956 Vide MP Government Act No 17 of 2015

CENTRAL LIBRARY

Ref. No. C.LIB/PKU/2023/Ph.D Scholar/099 Date: 23.06.2023

CERTIFICATE OF PLAGIARISM REPORT

1. Name of the Research Scholar	:	Deepak Kumar Sharma
2. Course of Study	:	Doctor of Philosophy (Ph.D.)
3. Title of the Thesis	:	प्राचीन काल में महिलाओं का राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक योगदान
4. Name of the Supervisor	:	Dr. Nidhi Tiwari
5. Department	:	Art
6. Subject	:	History
7. Acceptable Maximum Limit	:	10% (As per UGC Norms)
8. Percentage of Similarity of Contents Identified	:	10%
9. Software Used	:	Ouriginal (Formerly URKUND)
10. Date of Verification	:	06.06.2023

Signature of Ouriginal Coordinator
(Librarian, Central Library)
P.K.University, Shivpuri (M.P.)

LIBRARIAN
P.K. University
Shivpuri (M.P.)

ADD: VIL: THANRA, TEHSIL: KARERA, NH-27, DIST: SHIVPURI (M.P.) -473665
MOB: 7241115902, Email: library.pku@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

Copyright Transfer certificate

Title of the thesis,

"PRACHINKAL ME MAHILAO KA RAJNETIK SAMAJIK AVAM ARTHIK YOGDAN"

Research Scholar Name- Deepak kumar sharma

The undersigned hereby assigns to the P.K. University, Shivpuri all copyrights that exits in and for the above thesis submitted for the award of the Ph.D. degree.

Date: 12-07-2023

Place: शिवपुरी (म०प्र०)

P.K. University

दीपक कुमार शर्मा

(Deepak Kumar Sharma)

Note: However, the author may reproduce/publish or authorize others to reproduce materials extracted verbatim form the thesis or derivative of the thesis for the author's personal use provided that the source and the university's copyright notice are indicated.

Scanned with OKEN Scanner

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र की संसकृति का मापदण्ड नारी को माना जाता है, राष्ट्र के उत्थान में नारी के योगदान को महत्वपूर्ण चर माना जाता है। हमारे देश में भी संस्कृतियों के जन्म लेने से लेकर आज तक महिलाओं ने देश के समग्र विकास में महिलाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं को देवी का दर्जा प्रदान किया गया है। देवी शब्द 'देना' शब्द से बना है। क्योंकि भारतीय संस्कृति में प्रकृति की जो वस्तु हमें जीवन के महत्वपूर्ण अवयव प्रदान करे उसे देवता माना जाता है, जैसे जल देवता, अग्नि देवता आदि इसी प्रकार महिलाओं के समाज के लिए योगदान को देखते हुये इन्हें देवी उपमा दी गई है।

भारतीय संस्कृति में हड़प्पा सभ्यता से लेकर आज तक महिलाओं ने जो योगदान दिया है उसे भुलाया नही जा सकता चूकि हड़प्पा सभ्यता की लिपि को पढ़ा नहीं जा सका है इसी कारण इस संस्कृति में महिलाओं द्वारा किये गये योगदान पर काम प्रकाश पड़ता है, किन्तु फिर भी तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध किया जा चुका है कि यह सभ्यता मातृ सतात्मक थी, इस सभ्यता में महिलाओं के योगदान की पुष्टि इस बात से हो जाती है कि सभ्यता का मुख्य बिन्दु महिलाएँ ही रही थी। इस सभ्यता में महिलाओं को उच्च स्थान उनके द्वारा किये गये योगदान से ही प्राप्त हुआ था। हड़प्पा सभ्यता को भारतीय उपमहाद्वीप की प्रथम नगरीय सभ्यता होने का गौरव प्राप्त है, और इस नगरीय सभ्यता के विकास में महिलाओं ने सभी क्षेत्रों में योगदान दिया था। इस प्रकार हम महिलाओं के प्रारम्भिक योगदान की झलक पाते हैं।

वैदिक काल में भी समाज के उत्थान में महिलाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया क्योंकि अनेक वैदिक मन्त्रों की रचना महिलाओं द्वारा की गई इन वैदिक मन्त्रों से वैदिक युग से लेकर आज तक समस्त मानव सभ्यता ने इन मन्त्रों से लाभ उठाया है। इन विदूषी महिलाओं में गार्गी, मैत्रयी, विश्वारा, सुलभा, घोषा आदि के नाम लिए जा सकते है।

Scanned with OKEN Scanner

महाकाव्य काल में भी महिलाओं ने समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, इस काल को जानने वालों ने महिलाओं के योगदान की व्याख्या अपने–अपने तरीके से की है किनतु वाल्मीकि से लेकर तुलसीदास तक सभी ने महिलाओं के योगदान की सराहना की है।

प्राचीन काल में महिला योगदान से संबद्ध विषय को चुनने का उद्देश्य इस तथ्य को उजागर करने का है कि प्राचीन काल में महिलाओं के योगदान आज आधुनिक समय से भी कहीं अधिक थे क्योंकि मध्य काल में सामाजिक अवनति रही थी और महिलाओं की उपेक्षा की गई थी, उन्हें एक प्रकार से उपभोग की वस्तु मान लिया गया था और प्रत्येक प्रकार से उसकी स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगाया गया था, उसे पिजंरे में कैद कर दिया गया था, आधुनिक काल में कुछ स्वतन्त्रता जरूर दी गई लेकिन अभी भी व पूर्ण स्वतन्त्र नहीं है। यदि उसे पूर्ण सवतन्त्रता प्रदान कर दी जाये तो वह समाज के निर्माण में महती उपयोगी हो सकती है। महिलाओं की महत्ता को न समझकर समाज ने अपना ही नुकसान किया है, समाज को चाहिये कि वह महिलाओं की उपयोगिता से लाभ उठाकर उपना कल्याण करे व महिलाओं का सम्मान करे।

इस शोध का उद्देश्य किसी भी काल के उत्थान का संबंध महिलाओं के योगदान से सीधा संबंध रखता है किन्तु समाज का उत्तरदायित्व बनता है कि महिलाओं के प्रति अपने नजरिये को बदले क्योंकि महिलाओं के योगदान के बगैर कोई भी समाज उत्थान नहीं कर सकता है आज जिसे हम आधुनिक काल कहते है, महिलाएँ अच्छा योगदान कर रही हैं क्योकिं पुरूषों की मानसिकता उनके प्रति कुछ हद तक बदल गई है प्राचीन काल में पुरूषों की खराब मानसिकता नहीं थी।

प्राचीन काल में महिलाओं को अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त थी तो महिलाओं का योगदान भी अधिक था, मध्यकाल के आते–आते उसकी स्वतन्त्रता छीन ली गई थी तो महिलाओं का योगदान भी कम देखा गया किन्तु फिर भी रजिया बेगम सुल्तान, चाँदबीबी, रानीदुर्गावती जैसे

Scanned with OKEN Scanner

नाम सामने आ जाते है जिन्होने समाज के निर्माण में बहुत बहुत योगदान दिया। मेरे शोध का उद्देश्य यह दिखलाना है कि प्राचीन काल में महिलाओं का योगदान आधुनिक काल से भी अधिक था, जो कि लगातार बढाया जा सकता था किन्तु पुरूषों की दूषित मानसिकता के कारण इस योगदान की अनदेखी कर दी गई इनका उस समय से लेकर आजतक का सबसे खराब उदाहरण मध्यकाल है यदि कुछ उदाहरणों को छोड़ दे तो पूरा मध्यकाल महिलाओं का निम्न योगदान काल है। महिलाओं का निम्न योगदान काल इस बात को प्रदर्शित करता है कि मध्य–काल के आते–आते पुरूषों ने नारी को पंक्षी की तरह पिंजरे में कैद कर दिया और नारी की स्थिति दिन पर दिन खराब होती चली गई तब ऐसी स्थिति में हम नारी के उच्च योगदान की आशा कैसे कर सकते है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को सात भागों में विभक्त किया गया है और प्रत्येक भाग में देशकाल के अनुसार महिलाओं के योगदान को प्रस्तुत किया गया है, प्रत्येक भाग में महिलाओं के योगदान ? से संबंधित तत्वों को प्रस्तुत किया गया है, और प्रत्येक भाग में महिलाओं के योगदान में आये परिवर्तनों को भी दर्शाया गया है, इस शोध को निम्न सात भागों में बॉटा गया है।

प्रथम अध्याय ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय में स्रोत सामग्री का परिचय को प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में वैदिक काल ;600 ई0पू0 तक महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक योगदान प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में महाकाव्य, स्मृति व पुराण काल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक योगदान प्रस्तुत किया गया है।

पंचम अध्याय में बौद्ध, जैन मौर्य व मौर्योत्तर काल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक योगदान प्रस्तुत किया गया है।

षष्टम अध्याय में गुप्त काल व पूर्व–मध्य काल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक योगदान प्रस्तुत किया गया है।

Scanned with OKEN Scanner

सप्तम अध्याय में उपंहार को प्रस्तुत किया गया है इस भाग में प्रचीन काल से लेकर पूर्व मध्य काल तक महिलाओं द्वारा किया गया राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक योगदान तथा प्रत्येक काल खण्ड में महिलाओं के योगदान के तरीकों व परिवर्तनों को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। यह भी प्रस्तुत किया गया है कि इन परिवर्तनों के क्या कारण रहे थे।

इन कारणों को तलाशने की भरपूर कोशिश इस शोध प्रबन्ध के माध्यम से की गई है और प्रत्येक कारण पर विस्तार से विचार किया गया है ताकि आगामी होने वालों शोधों को भी सही दिशा प्राप्त हो सके।

Scanned with OKEN Scanner

शोध प्रविधि

शोध प्रविधिः—किसी भी शोध प्रबन्ध को शोध प्रविधि के द्वारा ही पूर्ण किया जा सकता है। मैंने अपने शोध प्रबन्ध में तुलनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया है, मेरा शोध प्रबन्ध "प्राचीन काल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान" में प्राचीन काल के विभिन्न कालखण्डों में महिलाओं द्वारा किये गये योगदान की समीक्षा की गई है और इन योगदानों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुये महिलाओं के योगदानों में आये अन्तर को भी बड़ी गहनता से पता लगाने का प्रयास किया गया है। मेरे शोध प्रबन्ध में हड़प्पा सभ्यता से लेकर पूर्व–मध्य काल तक सभी कालों में महिलाओं द्वारा किये गये राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान की साक्ष्यों के द्वारा पूर्ण पुष्टि की गई है और प्रत्येक कालखंड में महिलाओं द्वारा किये गये योगदान की तुलनात्मक तरीके से समीक्षा की गई है। हड़प्पा सभ्यता में पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार में महिलाओं के योगदान व उनकी सामाजिक अवस्थिति का पता लगाया गया है। जहाँ पर हमें महिलाओं के परिवार का मुख्य सदस्य होने व समाज का मातृसतात्मक होना पाया गया है। इसके बाद वैदिक काल में वैदिक साहित्यों के द्वारा महिलाओं के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान का पता चलता है। वैदिक काल में महिलाओं ने अनेक प्रकार से सामाजिक योगदान दिया था। अनेक वैदिक साहित्यों की रचना में वैदिक कालीन महिलाओं का प्रमुख योगदान था। वैदिक कालीन महिलाओं ने अपने योगदान के द्वारा तत्कालीन समाज में अपना स्थान पुरूषों के बराबर बनाये रखा था।

महाकाव्य काल में भी महिलाओं ने अनेक प्रकार से योगदान दिया। किन्तु वैदिक कालीन महिलाओं की सामाजिक अवस्थिति से इस काल में महिलाओं की अवस्थिति में कुछ ह्रास अवश्यक देखा गया। इसी प्रकार स्मृति व पुराण साहित्यों में भी महिलाओं के योगदान तो ठीक मात्रा में पाया जाता है किन्तु उनकी सामाजिक अवस्थिति में ह्रास नजर जाता है। गुप्त काल में महिलाओं का योगदान सराहनीय रहा और सामाजिक अवस्थिति भी बहतर रही इसके बाद पूर्व–मध्य काल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान तो भरपूर रहा किन्तु पुरूष समाज ने महिलाओं की प्रतिष्ठा व सम्मान को रौंद डाला, इसी आधार पर

Scanned with OKEN Scanner

हम अपने शोध–प्रबंधन की शोध–प्रविधि में तुलनात्मक पद्वति का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकताः–किसी भी समाज का अपना एक इतिहास होता है वह समाज अपने इतिहास के आधार पर ही विकसित होता। हमारा अपने समाज के उत्थान के प्रति कुछ उत्तरदायित्व होता है, इसलिये हम समाज की वर्तमान समस्याओं का समझने के लिये अतीत के अध्ययन को महत्वपूर्ण मानते हैं। जब तक हम अतीत का अध्ययन नहीं करेंगे तब तक हमें वर्तमान समस्याओं के बारे में ठीक से ज्ञान नहीं मिल पायेगा। मरे शोध प्रबंधन का विषय ''प्राचीन काल में महिलाओं का राजनीतिक समाजिक एवं आर्थिक योगदान'' प्राचीन काल में विभिन्न खण्डों में महिलाओं द्वारा किये गये योगदान को प्रकाश में लाता है इसलिये हमें प्राचीन काल में महिलाओं के सहयोग से सम्बन्धित सभी साक्ष्यों जैसे– साहित्य, पुरातात्विक साक्ष्य और विदेशी यात्रियों के वर्णन का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

यदि हम किसी कालखण्ड का अध्ययन नहीं करेंगे तो हमें उसक काल खण्ड में महिलाओं द्वारा किये गये योगदान का पता कैसे चलेगा। हम प्राचीन काल में महिलाओं द्वारा किये गये राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान के द्वारा ये पता लगा सकेगे कि प्राचीन काल में महिलाओं ने किस प्रकार योगदान दिया, इस प्रकार हम प्राचीनकाल में महिलाओं को मिलने वाली अधिकार व उनके कर्तव्यों के बारे में जानकारी का एक मात्र साधन प्राचीनकाल का अध्ययन करना ही माना जायेगा। यदि हम प्राचीनकाल में महिलाओं द्वारा किये गये योगदान से संबधित साहित्यों, साक्ष्यों या विवरणों का अध्ययन नहीं करेगे तो हमें उस काल में महिलाओं की वास्तविक स्थिति का पता नहीं चल पायेगा। इसलिये हमें तत्कालीन अध्ययन की आवश्यकता होती है। बिना अध्ययन के हम किसी भी समय की स्थिति का सही–सही अवलोकन नहीं कर सकते हैं और ऐसी स्थिति में हम वर्तमान समस्याओं को भी पूरी तरह से नहीं समझ पायेंगे, इसीलिये हमें अध्ययन की आवश्यकता होती है।

अध्ययन का उद्वेश्यः– जब हम किसी भी कार्य को करते हैं तो उसके पीछे एक उद्देश्य जुड़ा हुआ होता है। मेरा शोध प्रबंधन ''प्राचीनकाल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान'' में महिलाओं द्वारा प्राचीनकाल के

Scanned with OKEN Scanner

अनेक कालखंडो में किये गये योदान की तुलनात्मक समीक्षा करना है। इस समीक्षा के द्वारा हम महिलाओं की वर्तमान स्थिति व प्राचीन काल के अनेक कालखण्डों की स्थिति की भी तुलना कर सकते हैं। जब हम प्राचीनकाल में महिलाओं की स्थिति के बारे में गहनता से वैदिक काल व उसके बाद पूर्व मध्य काल तक लगातार महिलाओं के अधिकारों में कमही होती गई है। इस कमी के कारणों को खेजने के लिये हमें प्रत्येक काल खण्ड का गहनता से अध्ययन करना तथा सही तथ्यों को उजागर करना ही हमारे अध्ययन का उद्देश्य है।

प्रत्येक समाज अपने अनेक कालखण्डों से होकर गुजरा होता है उसी प्रकार महिलाओं द्वारा किया गया योगदान भी अनेक कालखंडों से गुजरा है, प्रत्येक कालखण्ड में महिलाओं की स्थिति व उनके द्वारा किये गये विभिन्न क्षेत्रों में किये गये योगदान को कालखण्ड के अनुसार आये अंतर को गहनता से अध्ययन करना ही हमारे अध्ययन का उद्देश्य है।

किसी भी समाज को जानने के लिये उस समाज का गहनता से अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक होता है। हमारे शोध–प्रबन्ध में महिलाओं द्वारा दिये गये योगदान व समाज में उनकी स्थिति व समाज द्वारा दिये गये उन्हें सम्मान या तिरस्कार को जानना भी हमारे अध्ययन का उद्देश्य है। इसी प्रकार प्राचीन काल में महिलाओं के द्वारा किये प्रत्येक कालखण्ड में कई प्रकार के योगदान की समीक्षा करते हुये उनकी तुलनात्मक समीक्षा करना ही हमरे अध्ययन का उद्देश्य है।

उपकल्पनाः–

किसी भी शोध प्रबन्ध के प्रारम्भ में हमें ऐसे विचार की आवश्यकता होती है जिससे कि हम अपने शोध प्रबन्ध में एक निश्चिख्त दिशा निर्धारित करते हैं, उपकल्पना बिल्कुल इसी प्रकार होती है जिस प्रकार पानी के जहाज को बीच समुद्र से किनारे पर अवस्थित कोई लाइट एक निशिचित दिशा देती है। मेरा शोध–प्रबन्ध "प्राचीन काल में महिलाओं का राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक योगनदा" में महिलाओं द्वारा प्रचीन काल के विभिन्न कालखण्डों में कियेग गये योगदान का विश्लेषण किया जायेगा जिससे कि हमें विभिन्न कालखण्डों में किये गये महिलाओं के योगदान की तुलनात्मक अध्ययन करना व उस अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकालना।

Scanned with OKEN Scanner

हमारे शोध प्रबन्ध '' प्राचीन काल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान'' में हमारी उपकल्पना महिलाओं को दिये गये अधिकार व उनके कर्तव्यों से जुड़ी है। प्राचीन काल में महिलाओं ने अधिक कर्तव्यों का निर्वहन किया क्योंकि उन्हें इस काल में अधिक अधिकार मिले हुये थे, प्राचीन काल में विभिन्न कालखण्डों में हड़प्पा सभ्यता से लेकर पूर्व मध्यकाल तक लगातार महिलाओं के अधिकारों में कमी आई, महिलाओं के अधिकारों में कमी समाज की दूषित मानसिकता के कारण आई, हमारे शोध–प्रबन्ध की उपकल्पना यह है कि यदि महिलाओं को पूर्ण अधिकार दिये जायें तो वे अपने कर्तव्यों का बहुत अच्छे ढ़ंग से निर्वहन कर सकती हैं। प्राचीन कालीन साक्ष्यों ने साहित्य पुरातात्विक और विदेशी यात्रियों के विवरण के आधार पर हमें प्राचीन काल के अनेक खण्डों में नारियों के योगदान में कमी का पता चलता है। यह कमी महिलाओं की प्रतिभा ह्रास के कारण नहीं बल्कि समाज में उनके अधिकारों में कमी किये जाने के कारण व समाज की दूषित मानसिकता के कारण आयी होगी। जिसका साक्ष्यों के साथ सटीक जानकारी हम अपने शोध प्रबन्ध में करेंगे।

शोध स्रोत–मेरे शोध प्रबन्ध का विषय प्राचीन काल में महिलाओं के योगदान से संबंधित है इसलिये मैने प्राचीन साहित्य, पुरातात्विक साक्ष्य व प्राचीन काल में आने वाले विदेशी यात्रियों के विवरणों को प्राथमिकता दी है। मैंने दोनों प्रकार के स्रेत प्राथमिक व द्वितीय स्रोत का प्रयोग इस शोध प्रबन्ध में किया है। प्राचीन मूल ग्रन्थों का प्राथमिक स्रोत के रूप में प्रयोग किया है व उन पर लिखी गई टीका व पुस्तकों का द्वितीय स्रोत के रूप में प्रयोग किया है।

शोध संकलनः–मेरा शोध प्रबन्ध प्राचीन काल में महिलाओं के योगदान से संबंधित है इसलिये मैंने प्राचीन काल में महिलाओं से संबंधित अन्य शोध कार्यों का भी अध्ययन किया, और प्राचीन ग्रन्थों का संकनल किया।

निष्कर्षः–प्राचीन काल के कालखण्डों का महिलाओं के राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक योगदान के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर यह सिद्व होता है कि जिन कालखण्डों में महिलाओं को अधिक अधिकार मिले हुये थे उन कालखण्डों में महिलाओं ने उपरोक्त क्षेत्रों में अधिक योगदान दिया।

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

क्र. संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	प्राक्कथन	I-VIII
2.	ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	1-20
3.	स्रोत सामग्री का परिचय	21-30
4.	वैदिक काल 600 ई0पू0 तक महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान	31-68
5.	महाकाव्य स्मृति व पुराण काल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान	69-87
6.	बौद्ध, जैन, मौर्य व मौर्योत्तर काल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान	88-109
7.	गुप्त का व पूर्व मध्य काल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान	110-157
8.	उपसंहार	158-174
9.	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	

प्रथम अध्याय

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

i. हड़प्पा काल में महिलाओं की स्थिति एवं योगदान।
ii. वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति व योगदान।
iii. महाकाव्य काल में महिलाओं की स्थिति व योगदान।
iv. बौद्व व जैन साहित्यों में महिलाओं की स्थिति व योगदान।
v. पुराण सहित्यों में महिलाओं की स्थिति व योगदान।
vi. महाजनपद काल में महिलाओं की स्थिति व योगदान।
vii. मौर्य व मौर्योतर काल में महिलाओं की स्थिति व योगदान।
viii. गुप्त काल में महिलाओं की स्थिति व योगदान।
ix. पूर्व मध्य काल मुं महिलाओं की स्थिति व योगदान।

हड़प्पा काल में महिलाओं की स्थिति व योगदान

प्राचीन भारत में सभ्यता का प्रारम्भ सिन्धु सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता में माना जाता है इस सभ्यता के योगदान में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, सिन्धु सभ्यता की लिपि को पढ़ा न जा सकता भी महिलाओं के योगदान को पूरी तरह से प्रकाश में न लाया जा सका किन्तु पुरातात्विक स्रोतों के आधार पर स्त्री मृण मूर्तियाँ अधिकता में मिलने से यह बात जरूर उजागर हो जाती है कि समाज में उस काल की महिलाओं का विशेष योगदान रहा होगा इस योगदान के महत्व को इसी बात से समझा जा सकता है कि हड़प्पा सभ्यता में नारी को परिवार में प्रथम स्थान प्राप्त था, ऐसे अनेक साक्ष्य मौजूद है जो इस बात की ओर इशारा करते है कि इस सभ्यता के उत्थान में महिलाओं ने कितना योगदान दिया। हड़प्पा सभ्यता में स्त्री मृण मूर्तियाँ अधिक मात्रा में प्राप्त हुई है। महिलाओं ने सिन्धु सभ्यता के योगदान में महती भूमिका अदा की थी इस बात के अनेक प्रमाण मौजूद है तथ्यों के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस सभ्यता में संगीत व नृत्य का विशेष महत्व रहा होगा जिससे प्राणियों में कला का संचार उत्पन्न हुआ होगा। नृत्य करती काँसे की नारी की मूर्ति प्रसन्न मुद्रा में है। इससे नगर के प्रसन्न जीवन की झाँकी प्राप्त होती है।

सिन्धु घाटी सभ्यता में मातृ सतात्मक समाज होने के प्रमाण प्राप्त हुये है। इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस सभ्यता में महिलाओं का कितना योगदान रहा होगा। ये तथ्य महिलाओं के योगदान को उजागर करते है।

वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति व योगदान

वैदिक काल में महिलाओं के योगदान से वैदिक साहित्य भरा पड़ा है जिनमें वागाम्भृणी, शश्वती, जुह, आदिति, रोमशा, सूर्या आदि के नाम लिये जा सकते हैं। इन महिलाओं ने प्रत्येक प्रकार से समाज के उत्थान में योगदान दिया था। घर में सधवा स्त्री का प्रथम स्थान था।

वैदिक समय में महिलाओं ने समाज के प्रत्येक अवयव में अपना योगदान दिया था क्योंकि अथर्ववेद में महिलाओं के दवारा सूत कातने व फैलाने की प्रशंसा की गई है। वैदिक काल में महिलाओं का आर्थिक योगदान भी परिलक्षित होता है क्योंकि वैदिक साहित्यों में अनेक स्थान पर पति-पत्नी के साथ गृहस्थ के कार्या को करने के प्रमाण प्राप्त हुये है, ऋग्वेद में एक स्थान पर पति-पत्नी दोनों का सामूहिक नाम ही दम्पत्ति है। इससे अच्छी तरह से समझा जा सकता है कि पति व पत्नी संयुक्त रूप से गृहस्थ आश्रम का किस प्रकार निर्वहन करते थे तथा महिलाएँ किस प्रकार गृहस्थ के कार्यों में अपना योगदान देती थी। वैदिक कालीन महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में योगदान दिया था। वैदिक कालीन महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में योगदान दिया था। प्रभु से प्रार्थना की जाती थी कि वह हमारी पुत्री को वेद ज्ञान से तृप्त करे जिससे वह सम्पूर्ण संसार को, इस ज्ञान का अधिकारी बना सके, जिससे की बेदों का प्रकाश फैलाया जा सके। जिस प्रकार प्रकाश फैलाने का कार्य सूर्य देव का होता है, उसी प्रकार ज्ञान के प्रसार के लिये इस काल में नारी को चुना गया क्योंकि यह कार्य महिलाओं ने अपने गुणों से भलि प्रकार किया था।

वैदिक कालीन स्त्रियों ने समाज में प्रत्येक वर्ग को अपना योगदान किसी न किसी प्रकार जरूर अपना योगदान दिया। जब पुरूरवा इन्द्रलोक की अपसरा उर्वशी के मोह जाल में फॅस जाता है तो उर्वशी पुरूरवा को प्रत्येक प्रकार से समझाती है, चूकी पुरूरवा उर्वशी का मोह नहीं छोड़ रहा था तो वह महिलाओं को विश्वास घाती तक बता देती है।

इस काल में महिलाओं के योगदान के कारण उनका आदर सत्कार भी किया जाता था। घर का प्रत्येक सदस्य घर की माता का सब प्रकार से सम्मान करता था। क्योंकि माता धरती माता के समान हमें हमारी जरूरत की सभी चीजें प्रदान करने में समश्र्य होती थी।

महाकाव्य काल में भी महिलाओं के योगदान से महाकाव्य काल का साहित्य भरा पड़ा है, महाभारत के अनुसार महिलाएँ पूजा से योग्य महा भाग्यशीला तथा पुष्पवती है, महिला के बिना घर, को घर नहीं कहा जा सकता वे घर की शोभा है। महिलाओं के योगदान के बिना कोई समाज घर का रूप धारण नहीं कर सकता समाज की सबसे छोटी इकाई घर को माना जाता है और यह घर महिला के योगदान के बिना नहीं बनया जा सकता। और न ही इसके बिना उत्थान हो सकता है।

महाकाव्य काल में भी यज्ञ का अपना विशेष महत्व रहा है यज्ञ के बगैर कोई शुभ कार्य सम्पन्न नहीं माना जाता था, ग्रहस्थ कार्य भी एक प्रकार का यज्ञ है, जब इसकी लपटें मंद पड़ने लगती है, तो पत्नी उसे अपने सहयोग से प्रदिप्त करती है। महाभारत काल में समाज के निर्माण में पुत्रियों ने भी अपना योगदान दिया था इसलिए उन्हे पुत्रों के समान ही समझा जाता था। महाकाव्य काल में अनेक स्थानों पर महिलाओं द्वारा स्वातियोग करने के उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं जो कि महिलाओं द्वारा एक विशेष प्रकार का अनुष्ठान था। राम के राज्याभिषेक के समय कौशल्या स्वातियोग प्रातः काल कर रही थी। इस प्रकार हम कह सकते है कि वैदिक काल ही की भांति इस काल में भी महिलाओं ने अकेले ही वैदिक मन्त्रों व यज्ञ आदि पर अपना पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त कर लिया था, जिससे की महिलाओं का राजनीतिक योगदान सिद्ध हो जाता है, इस काल में कौश्लया के उदाहरण से ये बात स्पष्ट हो जाती है कि महिलाओं को अब यज्ञ आदि के लिये पुरोहित की अनिवार्यता नही थी।

महाभारत काल में महिलाओं ने अपने योगदान से न केवल अपना अपितु अपने पतियों को भी सदमार्ग पर चलने को प्रेरित किया चूड़ाला सौराष्ट्र देश के राजा की लड़की थी। द्वापर युग में इसका जन्म हुआ था, यह बडी सुशिक्षित और संगीत नृत्यादि कलाओ में बडी निपुण थी। साथ ही उसका सौन्दर्य भी मामूली न था इनका विवाह उज्जैन के राजा शिखिध्वज से हुआ चूड़लाने अपने पति के मन में ब्रहम साक्षात्कार करवाया था।

जसमें महिलाओं की अनिवार्यता रही है क्योंकि इस कला पर महिलाओं का प्रभुत्व रहा है।
बौद्ध साहित्यों में भी नारी के योगदान की गाथाएँ भरी पड़ी है, बौद्ध काल में भी महिलाओं ने बहुत योगदान दिया था। मद्र देश की राजकुमारी का बिम्बिसार के साथ पाणिग्रहण संस्कार हुआ था। गौतम बुद्ध ज्ञान प्राप्त करने के बाद प्रथम राजा बिम्बिसार के पास गये जो उनके प्रथम श्रावक के रूप में प्रसिंद्ध है, खेमा नें विधि पूर्वक प्रवज्या ग्रहण की बुद्ध ने खेमा को महाप्रज्ञा वती की उपाधि प्रदान की। गौतम बुद्ध ने खेमा के व्यक्तित्व को पहचान लिया था, इसी कारण बुद्ध ने इन्हें महा प्रज्ञावती की उपाधि प्रदान की।
बौद्ध साहित्य त्रिपिटक में भी महिलाओं की ओजस्वी वाणियाँ भरी पड़ी है और इन ओजस्वी वाणियों में विभिन्न प्रकार के शुभ संदेह दिये गये है, बौद्ध भिक्षुणी चन्द्रा का जीवन चरित्र व ओजस्वनी वाणियाँ आज भी त्रिपिटक में उपलब्ध में चन्द्रा ने अपने संबंध में उदत्त वाणी कही है 'अहो अमोध था देवी का उपदेश, मैं आज तीनों विधाओं की ज्ञाता हूँ सब चितमलों में विमुक्त हूँ। बौद्ध साहित्यों से प्रकट होता है कि तत्कालीन वैश्याएँ पर्यात रूप से शिक्षित और सुसंस्कृत होती थी इस संबंध में आम्रपाली का उल्लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जिसने ज्ञान प्राप्त करने के लिये अपनी सभी भौतिक सम्पत्ति को त्याग दिया था। इस प्रकार हमें आम्रपाली के उदाहरण से महिलाओं के त्याग का पता इस काल में चल जाता है। नारी ने बुद्ध व जैन साहित्यों में अपार योगदान दिया इस योगदान ने उसे महान बनाया व भगवान बुद्ध की शिष्या होने का गौरव प्रदान किया।
जातक कथाएँ भी अनेक विदूषी महिलाओं का उल्लेख करती हैं और बौद्ध साहित्य में महिलाओं के योगदान को दर्शाती हैं, जातक, अमरा और उदुम्बरा नामक दो विदूषी स्त्रियों को वर्णन करते है, भद्राकुंड केशा राजगृह के एक धनी श्रेष्ठी की पुत्री थी। भिक्षुणी धर्म स्वीकार करने के बाद उसने अपनी विद्वता के कारण बडी ख्याति पाई थी। थेरीगाथा में बौद्ध भिक्षुणियों द्वारा रचित गीतों का संग्रह है। इससे उनकी विद्वता स्पष्ट हो जाती है।

पुराण साहित्यों में महिलाओं के द्वारा समाज व पुरूष को अपने सामने नतमस्तक होते हुए कई स्थानों पर दिखाया गया है, किन्तु अनेक स्थानों पर महिलाओं ने अपने प्रभाव से देवताआंे तक को नतमस्तक कर दिया था। प्रतिष्ठानपुर की राजकुमारी शाण्डिली का विवाह कौशिक नामक ब्राहमण से हुआ था। माण्डव्य ब्राहमण की सूली पर पैर रखने के कारण उसे शाप मिला था कि सूर्योदय होने पर कौशिक बाहमण की मृत्यु हो जायेगी किन्तु शाण्डिली ने अपने तेज के प्रभाव से सुर्योदय होने ही नहीं दिया। पुराण साहित्य में नारियों ने अपनी तपस्या से देवताओं को भी प्राप्त किया था। दानव राज पुलोमा की पुत्री ने तपश्या से इन्द्र को प्राप्त किया था। पुराणों में नारी के प्रत्येक रूप की व्याख्या की गई है, क्योकि प्रत्येक रूप ने नाना प्रकार से योगदान दिया पुलोमा, की पुत्री ने अपनी तपश्या द्वारा प्रसन्न करके इन्हे प्राप्त किया था, पुराणों में अनेक स्थानों पर महिलाओं के योगदान की चर्चा की गई है, और वे इस प्रशंसा की हकदार थी।
पुराण साहित्यों में महिलाओं का योगदान अनेक प्रकारों से प्रकट होता है, इन साहित्यों में महिलाओं ने सिद्धान्त के द्वारा तो समाज में योगदान दिया ही था व्यवहारिक रूप से भी काफी योगदान दिया, व्यवहारिक शिक्षा में पाक शास्त्र, कढाई, सिलाई वस्त्र रंगने माला गूथने, सुगन्धित पदार्थ निर्माण, पुस्तक शिक्षा, चिकित्सा विज्ञान, संगीत, व्यायाम, मनोरंजन, राजनैतिक शिक्षा, सम्यक दर्शन, सम्यक धर्म आदि की शिक्षा प्रदान की जाती थी जो आज भी अज्ञात है, कुछ बालिकाएँ प्रचीन इतिहास तथा पौराणिक कथाएँ भी पढ़ती थी। और इतनी शिक्षित थी कि काव्य रचना कर सकती थी।

भारतीय साहित्यों के अनुसार महिलाओं के योगदान को विभिन्न कालों में दर्शाया गया है इन साहित्यों में अपने काल व परिस्थिति के अनुसार महिलाओं के योगदान को दर्शाया गया है। भारतीय साहित्यों के अनुसार तो महिलाओं की प्रत्येक प्रकार से प्रशंसा की ही है, इसके अलावा विदेशों में भी, साहित्यों में महिलाओं की अनेक प्रकार से प्रशंसा की गई है। मिश्र में 1600 बी.सी संरक्षिका रानी के रूप में कार्य करने का उदाहरण मिलता है।

भारतीय महाजनपद काल में महिलाओं ने इस काल में भी अनेक प्रकार से योगदान दिया था। अंग जनपद में चंपा के शासक सिंहरथ के मरने के बाद अल्पवयस्क पुत्र श्रीपाल की संरक्षिका कमलप्रभा बनी, श्रीपाल के चाचा अजित सेन ने जब श्रीपाल को मारना चाहा तो कमलप्रभा ने अपनी तीव्र बुद्धि से श्रीपाल के प्राणों की रक्षा की। पुरूष व महिलाओं के अलग-अलग अपने ढंग से व्यापार करने के साक्ष्य महाजनपद काल में प्राप्त होते है, इसीलिए महाजनपद काल में महिलाओं के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता, और राष्ट्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया था, इस काल में सार्थवाह पुषणक व उसकी पत्नी शिवदत्त व्यापार में अलग-अलग व्यस्त थें। इससे इस काल में महिलाओं के स्वतन्त्र आस्तित्व व योगदान का पता चलता है। महाजनपद काल वह काल था जब परम्परागत मान्यताऐं ध्वस्त हो रही थी और नये। विचारों का प्रचार हो रहा था तब छोटे-छोटे जनपद बडे जनपद बन रहे थें और एक एक दूसरे को शक्ति के द्वारा झुका रहे थे, किन्तु मंहिलाओं ने इस युग में भी शांति सन्देश दिया।

मौर्य काल में भी महिलाओं ने समाज में अपना योगदान दिया था, भारतीय इतिहास का वर्णन बगैर मौर्यकाल के अधूरा सा है, मौर्य काल में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान, सामाजिक और राजनैतिक सभी दृष्टि से एक नये युग की शुरूआत हुई थी, सेल्युकस व चन्द्रगुप्त की सन्धि का केन्द्र बिन्दु भी सेल्युकस की पुत्री से चन्द्रगुप्त मौर्य का विवाह था। इस विवाह के द्वारा भारत के पश्चिमोत्तर तीन राज्य चन्द्रगुप्त मौर्य को प्राप्त हुऐ थे और पश्चिमोत्तर क्षेत्र में भारत की भाषा, संस्कृति, सभ्यता का प्रसार हुआ था।

हर्यंक वंश के संस्थापक बिम्बिसार ने अपनी राजधानी मगध से अपनी सीमाओं में प्रसार करने के लिए जब कदम बढाया तो उसे काफी कठनाईयों का सामना करना पडा किन्तु जब बिम्बिसार ने उस समय के सबसे बडे गणराज्य लिच्छिवी के शासक चेटक की पुत्री चेलना से विवाह कर लिया तो बिम्बिसार की कठनाई दूर हो गई थी। इसी प्रकार मगध को राज्य विस्तार में महिलाओं का विशेष सहयोग दिखाई पड़ता है, इसी प्रकार अजातशत्रु ने भी राज्य विस्तार के लिये वैवाहिक संबंध स्थापित किये थे, अजातशत्रु ने प्रसेनजित की पुत्री वाजिरा से विवाह किया और प्रसेनजित ने काशी का राज्य अजातशत्रु को वापिस कर दिया। इस प्रकार महिलाओं के सहयोग के द्वारा ये कठिन कार्य सम्पन्न हुये। इस प्रकार महा जनपद काल में हमें राज्यों में की गई सन्धियों से महिलाओं के योगदान का पता चल जाता है। इन सन्धियों में बहुमूल्य जन व धन की हानि होने से बचाई थी जो कि इस समय के विवाह संबंधो के द्वारा सम्भव हो पाया था।

गुप्त काल अनेक स्थानों पर महिलाओं ने शासन संचालन भी किया था। और अपने राज्य को छिन्न भिन्न होने से बचाया था। चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त ने वाकाटक राज्य को संभाला था। गुप्त काल ग्रंथ अमरकोष में भी महिलाओं के द्वारा दिये गये सामाजिक योगदानों की वृहद रूप से चर्चा की गई है, अमर कोश में महिला शिक्षिका और वेदों में पारंगत कन्याओं का वर्णन मिलता है, कन्याएँ मेलों उत्सवों और खेलों में भाग लेती थी। गुप्त कालीन साहित्य में नारियों के योगदान की विस्तृत रूप से चर्चा की गई है।

वराहमिहिर के अनुसार मनुष्य धर्म, अर्थ और काम के लिये पत्नी पर आश्रित है। वराहमिहिर के इस वाक्य से तत्कालिक महिला स्थिति का ज्ञान किया जा सकता है। वराह मिहिर ने पुरूष को पूर्णतः नारी के आश्रित दिखलाया है, और नारी महत्ता को प्रकाशित किया है, इस युग में कुछ तथ्य महिलाओं की अवनति की चर्चा जरूर करते है किन्तु फिर भी नारी के योगदान में कोई कमी नही देखी गई।

गुप्त कालीन रानियो ने जो योगदान दिया उसे भुलाया नहीं जा सकता, किन्तु गुप्त कालीन गणिकाओं ने भी गुप्त की सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान दिया। इस समय की गणिकाओं ने मन्दिर और तालाब समाज की सांस्कृतिक धरोहर होती थी, गणिकाओं ने इन सार्वजनिक कार्यों में योगदान करके समाज को बहुत फायदा पहुँचाया था।

गुप्तोत्तर काल या पूर्व मध्य काल में भी महिलाओं ने सभी क्षेत्रों में अपना योगदान दिया, इस काल में भी प्राचीन काल की तरह ही महिलाओं ने अपनी स्वतन्त्रता में कमी होने के बावजूद सामाजिक कार्यों से विमुख नहीं हुई और समाज के उत्थान के कार्यों में महती भूमिका अदा की। महिलाओं को नृत्य संगीत वाध, काव्य, चित्रकला, मालाग्रन्थन की शिक्षा प्रदान की जाती थी।

बाणभट्ट ने हर्षचरित में राजश्री द्वारा नृत्य संगीत एंव अन्य कलाओं में प्रवीणता प्राप्त करने का वर्णन है। राजश्री नृत्य कला में प्रवीण थी तथा वह अन्य कलाओं की शिक्षा प्राप्त कर रही थी। इस प्रकार इस समय में स्त्रियों की कला के प्रति समर्पण और कला के क्षेत्र में योगदान का पता आसानी से चल जाता है।

इस समय में महिलाओं के कला में योगदान के अनेक उदाहरण मिल जाते है। हेनसांन जो कि एक चीनी यात्री था विवरण देता है। कि मुल्तान के सूर्य मन्दिर में स्त्री ही गाती बजाती थी। दीपक जलाती थी तथा सुगन्ध पुष्प आदि से पूजा-अर्चना करती थी। उपरोक्त विवरण के आधार पर पूर्व मध्य काल में भी महिलाओं के योगदान की पुष्टि की है। यह काल एक ऐसा समय था जब विदेशी आक्रमण तीव्र हो रहे थे और समाज में उथल पुथल की स्थिति उत्पन्न हो चुकी थी ऐसी स्थिति में महिलाओं का घर से निकलना भी दूभर हो गया था, तब भी स्त्रियों ने अपना योगदान समाज को दिया।

प्रस्तुत ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर हमें ज्ञात होता है कि प्राचीन काल से लेकर पूर्व-मध्यकाल तक साहित्य व स्रोतां के आधार पर सिद्ध हो जाता है कि समाज में समय के हिसाब से जितनी स्वतन्त्रता महिलाओं को मिली है, उससे कही अधिक वह स्वतन्त्रता की हकदार थी।

द्वितीय अध्याय

स्रोत सामग्री का परिचय

i. वैदिक साहित्य
ii. ब्राह्मण ग्रन्थ
iii. महाकाव्य
iv. स्मृतियाँ
v. बौद्ध साहित्य
vi. जैन साहित्य
vii. अर्थशास्त्र
viii. मुद्राराक्षस
ix. राजतरंगिनी
x. हर्षचरित
xi. विदेशियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य
xii. पुरातत्व संबंधी साक्ष्य

1.भारतीय धर्मग्रन्थ

वैदिक साहित्यः- वैदिक साहित्यों में ऋग्वेद सामवेद, यजुर्वेद व अथर्ववेद को रखा जा सकता है अनेक विद्वानों द्वारा इनके रचना काल के बारे में भिन्न-भिन्न मत प्रस्तुत किये जाते हैं किन्तु सर्वमान्यता से इनका रचना काल 1500 ई0पू0 से 1000 ई0पू0 माना जाता है। वैदिक उत्तर वैदिक काल से लेकर महाजनपदों के उदय तक धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक ज्ञान के लिये ये साहित्य अति महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इस प्रकार इस युग को प्रकाश में लाने का कार्य इन ग्रन्थों ने ही किया है।

वेदों में अनेक स्थानों पर महिलाओं को मिलने वाले रिक्त लाभ, स्त्री धन आदि का वर्णन किया है। इस धन के प्रयोग से हम महिलाओं के द्वारा दिये गये योगदानों को समझ सकते है। ऋग्वेद में अनेक ऐसे सूत्र हैं जिनकी ऋषिकाएँ महिलाएँ है।

यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा एवं सम्राज्ञेधि प्रत्युरस्त परेत्य च।। उपरोक्त मंत्र में जिस प्रकार स्त्री को गृह पर शासन करने का आशीवाद दिया गया है, उससे वैदिक कालीन नारी का सम्मानीय स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। वेदों में माता को अत्यन्त सम्मान जनक स्थान प्राप्त था, उन्हे प्रत्येक गृह में प्रारम्भिक शिक्षक माना जाता था माताओं ने प्रारम्भिक गुरू के कार्य को बड़ी सहजता से अपनी संतान के लिये किया था। वेदों से हमें प्राचीन काल में नारी के विभिन्न रूपों में किये गये योगदान की जानकारी प्राप्त होती है नारी की सामाजिक स्थिति के साथ-साथ हमें अर्थ व्यवस्था में नारी के योगदान व उसकी आर्थिक स्थिति की भी जानकारी हमें प्राप्त होती है। इस प्रकार हमें वेदों द्वारा तत्कालीन नारी के द्वारा सभी क्षेत्रों में किये गये योगदान को समझने में काफी मदद मिलती है। वैदिक मन्त्रों की रचना में अनेक वैदिक कालीन विदूषी महिलाओं ने अनेक मन्त्रों की रचना की थी इन मंत्रों को ऐतिहासिक साहित्य के रूप में लिया गया है, इस प्रकार हम तत्कालीन श्रोतों में नारी योगदान की बड़ी झलक पाते है।

ब्रहामण ग्रन्थः- वैदिक मन्त्रों तथा संहिताओं की गद्य टीकाओं को ब्रहामण कहते है। इन ग्रन्थों में भी स्त्री को यज्ञ का अधिकारी बतलाया गया है, इन ग्रन्थों के अनुसार भी स्त्री वेदों का अध्ययन करने के लिये स्वतन्त्र थी यज्ञ आदि कार्यों में पत्नी की उपस्थिति को अनिवार्य बतलाया गया है इससे हमें पता चलता है कि ब्राहमण काल में राजनीतिक कार्यों में स्त्री को कितने अधिकार प्रदान किये गये थे। स्त्री को पुरूष का अद्र्वंग कहा गया है। जो कि नर के आधे शरीर का घोतक है।

उपनिषदः- वैदिक साहित्यों के अन्तिम भाग उपनिषद कहलाते हैं। इनमें नारी को सर्वशक्तिमान परमात्मा की शक्ति के रूप में दर्शाया गया है नारी को प्रभु का अंश भी कहा गया है। उपनिषदों में नारी संबंधी अनेक प्रसंग प्राप्त होते है। इस काल में कन्याओं की स्थिति पर्याप्त अच्छी थी विदूषी कन्याओं के लिये लोग ईश्वर से प्रार्थना करते थे। गार्गी, मैत्रेयी आदि विदूषी नारियों ने समाज में नारी का स्थान रोशन किया माता सर्वथा वन्दनीय ही थी। इस प्रकार उपनिषदों में नारी के सभी रूपों की चर्चा की गई है और प्रत्येक रूप में उसकी महत्ता को भी दर्शाया गया है। उपनिषद वेदों के अन्तिम भाग है और ये दर्शन के प्रारम्भिक रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं इन गन्थों में भी अनेक विदूषी महिलाओं की चर्चा की गई है। इन पर आदि गुरू शंकराचार्य ने भाग्य लिखे थे। इन गन्थों का वैदिक काल में महत्व है।

महाकाव्यः- वैदिक साहित्यों के बाद रामायण और महाभारत दो महाकाव्यों का निर्माण हुआ ये भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं, इन दोनों ग्रन्थों में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान दशा की जानकारी मिलती है। ये महाग्रन्थों की श्रेणी में रखे जाते है और भारत ही नहीं अपितु समस्त विश्व में इन ग्रन्थों को आदर्श ग्रन्थ माना गया है।

रामायणः- रामायण में सीता के माध्यम से हमें तत्कालिक नारी के योगदान की झलक प्राप्त हो जाती है। पति-पत्नी के अगाध प्रेम एक दूसरे के प्रति समर्पण तथा सीता द्वारा एक आदर्श नारी के कर्तव्य व उसके द्वारा किये गये कृतों से हमें उस काल की नारी के योगदान की झलक प्राप्त हो जाती है। इस ग्रन्थ से हमें ज्ञान होता है कि परिवार में पति के प्रभुत्व रखने पर पत्नी की प्रभुता में कोई कमी नहीं थी। इस काल में भी गृहस्थ आश्रम को सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। प्रत्येक स्थान पर नारी विषयक प्रसंगों में विशेष शिष्टाचार एवं सम्मानपूर्ण व्यवहार प्रदर्शित किया गया है।

स्मृतियाँः- इनमें तत्कालीन सामाजिक संस्थाओं की अच्छी जानकारी प्राप्त होती है, इनमें सामाजिक विषयों का वर्णन प्राप्त होता है, याज्ञवल्क्य, व्यास तथा विष्णु स्मृतियाँ कन्या के विवाह को रजोदर्शन से पूर्व अच्छा मानते हैं। व्यास व गौतम ने कन्या को स्वतन्त्र व कई प्रकार से कार्यों की अधिकारिणी माना है। इन्होने कन्या को स्वयंवरण की पूर्ण स्वतन्त्रता दी है।

यदि किसी कन्या का पिता जीवित न हो तो स्मृतियों में कन्या के सगे संबंधी उसका कन्यादान कर सकतें हैं एक स्थान पर विष्णु स्मृति में नाना को भी कन्यादान का अधिकार दिया है। सभी स्मृतियों में कन्या उत्तर अलंकार एवं आभूषण देने की बात कही गयी है। इस धन पर केवल स्त्री का ही अधिकार माना गया है, और इसे स्त्रीधन कहा गया है। स्मृतयों में पति के मृत्यु हो जाने पर पत्नी अपने पति के भाई या किसी सगं संबंधी से पुनः विवाह कर सकती थी, जिसे नियोग कहा जाता था। इस प्रथा के द्वारा स्मृतिकारों ने महिला के मातृत्व योगदान को बनाये रखने के लिये नारी नियोग की छूट दी। इस प्रकार स्मृतिकाल में भी नारी के योगदान के प्रमाण प्राप्त होते है। इस प्रकार स्मृति कारों ने कन्याओं को अपने लिये वर तलाश करने की भी छूट देदी थी क्योंकि कन्याओं ने अपनी विद्वता के कारण अपने संबंधियों द्वारा ढूढ़े गये वर से उच्च वर की तलाश करना सीख लिया था।

बौद्ध धर्मः- बौद्ध ग्रन्थों से भी हमे तत्कालीन नारी के सामाजिक योगदान व उसकी स्थिति की जानकारी प्राप्त हो जाती है, इन साहित्यों में नारी को बहुत स्वतन्त्रता प्रदान की गई है और नारी को पुरूष के बराबर का दर्जा प्रदान किया गया है, इन ग्रन्थों से हमें ज्ञात होता है कि इस काल में अनेक महिलाओं ने भिक्षुणी बनकर संघ में प्रवेश किया व अनेक महिलाओं ने भिक्षुणी बनकर संघ में प्रवेश किया व अपने मोक्ष के लिये स्वयं प्रयत्न किये जिससे नारी के स्वातन्त्रय का पता चल जाता है। परिवार में माता का स्थान उच्च था, नारी की सार्थकता उसके मातृत्व में मानी जाती थी। असातमत्त जातक के अनुसार एक सुशिक्षित आचार्य अपनी बूढ़ी माता को अपने हाथ से नहलाता, खिलाता और सभी प्रकार से उसकी सेवा करता था।

बुद्ध कालीन स्त्रियां सुशिक्षित थी, अनेक शिक्षिका स्त्रियों को भी चर्चा की गई है। बुद्ध कालीन दासियों ने भी समाज में योगदान दिया था, अधिकांश दासियाँ गृह कार्यों में व्यस्त रहती थी, दासियाँ वीणा, मृदंगा गायन आदि में निपुण होने के प्रमाण प्राप्त होते है। इस काल की गणिकाओं के भी राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान के प्रमाण प्राप्त हो जाते है गणिकाओं ने भी राज्य में अपने श्रम द्वारा भरपूर योगदान दिया था जिसके साक्ष्य बौद्ध ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर प्राप्त होते है। बौद्ध ग्रन्थों में अनेक स्थानां पर महिलाओं के द्वारा अनेक प्रकार के सहयोग की चर्चा प्राप्त होती हैं, महिलाओं के द्वारा संघ संचालन के भी प्रमाण प्राप्त होते है, अनेक महिलाओं को कवयित्री भी कहा गया है, जो थेरीगाथाओं में वर्णित है।

जैन साहित्यः- जैन साहित्यों में आगम ग्रन्थ परिशिष्ट पर्वन, भगवती सूत्र, कल्पसूत्र आदि आते हैं। जैन साहित्यों से हमें तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का पता चलता है, आगमों में हमें नियोग प्रथा के उदाहरण मिलते हैं, गणिकाएँ समाज का अभिन्न अंग थी और उसके सामाजिक योगदान के भी प्रमाण प्राप्त होते हैं जैन साहित्यों में हमे विवाह व्यवस्था के बारे में भी पता चलता है इस समय के तीन प्रकार के विवाहों का उल्लेख मिलता है- माता-पिता द्वारा आयोजित विवाह स्वयंवर विवाह गन्दर्भ विवाह साधारणतया अपनी जाति में विवाह करने का चलन था। समान स्थिति तथा व्यवसाय करने वाले लोगों के साथ विवाह संबंध स्थापित किया जाता था। विवाह के पश्चात पति-पत्नी में सम्पूर्ण सामंजस्य की कामना की जाती थी। जैन साहित्यों में पति व पत्नी के सम्बन्धों को मधुर बनाने के अनेक उपायों का भी वर्णन किया गया है।

अर्थशास्त्रः- इस ग्रन्थ की रचना कौटिल्य ने की थी जो कि मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य का गुरू व प्रधानमन्त्री था। इस ग्रन्थ से मौर्य कालीन अर्थव्यवस्था व सामाजिक व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है, इन ग्रन्थ द्वारा भी महिलाओं के राजनीतिक आर्थिक व सामाजिक योगदान के प्रमाण प्राप्त होते हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में पहली बार महिलाओं के स्त्रीधन की भी चर्चा की गई है, इस धन को कौटिल्य ने स्त्रियों के अधिकार में रखकर बहुत बड़ा कार्य किया क्योंकि इससे यह प्रमाणित हो गया कि महिलाओं में कितनी सामथ्र्य है।

कौटिल्य के अर्थ शास्त्र से हमें मौर्य कालीन कन्याओं की स्थिति का पता चलता है इस ग्रन्थ में विवाह के प्रकार, स्त्रीधन, गणिका, दास प्रथा, स्त्रीयों द्वारा मौर्य समाज में किये गये विभिन्न क्षेत्रों में योगदान का पता चलता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से ज्ञात होता है कि महिलाओं द्वारा मनोरंजन के अनेक प्रकार जैसे- नर्तक, गायन, वादन आदि में योगदान दिया।

राजतरंगिनीः- 12वीं शताब्दी में कश्मीरी ब्रहामण कल्हण द्वारा संस्कृत में उत्तर-पश्चिम भारतीय उपमहाद्वीप के विशेष रूप से कश्मीर के राजाओं पर लिखा गया एक ऐतिहासिक ग्रन्थ है, इस ग्रन्थ से भी हमें महिलाओं द्वारा किये गये योगदान का पता चलता है।

हर्षचरितः- थानेश्वर के राजा हर्षवर्धन के दरबारी कवि बाणभट्ट द्वारा रचित यह ग्रन्थ 7वी शताब्दी में लिखा गया इसके माध्यम से कौटिल्य का अर्थशास्त्र तत्कालीन राजनीति शास्त्र पर लिखा गया एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है, लेकिन उसमें तत्कालीन व्यवस्थाओं को भी दर्शाया गया है इस ग्रन्थ के माध्यम से हमें मौर्यकाल में नारियों द्वारा किये गये सामाजिक योगदान का पता चलता है। यह बाणभट्ट की पहली रचना थी। हर्षचरित प्रथम ऐतिहासिक जीवनी होने का गौरव प्राप्त है।

विदेशियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य

साहित्यिक श्रोतों के अलावा भारत में आये विदेशी यात्रियों के विवरण से तत्कालीन समाज में नारियों की स्थिति का पता चलता है, मैगस्थनीज यूनानी शासक सेल्यूकस का राजदूत था जिसके द्वारा इण्डिका ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ में मौर्यकालीन समाज ने नारियों के योगदान के बारे में पता चलता है।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में चीनी यात्री फाहियान भारत आया इसने बौद्ध ग्रन्थों का विशेष तौर पर अध्ययन किया, इसने अपने यात्रा विवरण मंे तत्कालीन भारतीय समाज का चित्रण किया है। इसी प्रकार इत्सिंग भी 7वीं शाताब्दी में भारत आया इसके यात्रा विवरणों में हमे नालन्दा विश्वविद्यालय, विक्रयशिला विश्वविद्यालय तथा तत्कालीन समाज की शैक्षिक स्थिति के बारे में पता चलता है। इसी प्रकार अल्बेरूनी, महमूद गजनवी के साथ भारत आया जिसने तहकी के- हिन्द पुस्तक लिखी इसमें भारत के वर्ण, जातियों, आश्रम, संस्कार, विवाह, रीति-रिवाज के अतिरिक्ति हिन्दु धर्म, न्याय, भूगोल, ज्योतिष, गणित, रसायन आदि की भी चर्चा की गई है। तिब्बती बौद्ध लेखक तारानाथ के कंग्यूर और तंग्यूर नामक अपने गन्थों में नन्द मौर्य शुगों आदि राजवंश के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

पुरातत्व संबंधी साक्ष्य

अभिलेखों के श्रोत के रूप में अधिक प्रमाणित माना जाता है। पुरातत्विक श्रोतों में भी अनेक प्रकार के श्रोत आते है, इनमें उत्खनन से प्राप्त सामग्री, मुद्रा या सिक्के, स्मारक या पुरावशेव, उत्कीर्ण लेख आदि को रखा जाता है। कुछ उत्कीर्ण लेख निम्न प्रकार हैं-

1. रानी स्तम्भ लेखः- अशोक ने अपनी रानी कारूवाकी द्वारा किये गये जनहित के कार्या का विवरण दिया है। रानी कारूवाकी ने आम्रवाटिका, दानशाला व विश्रामगृह बनवाये।
2. नानाधार के अभिलेखः- सातवाहन शासक सिमुक के पुत्र शातकर्णी की पत्नी नागनिका ने यज्ञ के अवसर पर खुदबाया था। इसमें नागनिका को शासन संचालन करते हुये दिखाया गया है।
3. नासिक अभिलेखः- यह अभिलेख गौतमीपुत्र शातकर्णी के राज्य के 18 वर्ष पूरे होने पर खुदवाया गया इसमें खेत के दान का वर्णन है, इस अभिलेख के नीचे एक अभिलेख खुदा है। जिसमें शातकर्णी की माता गौतमी द्वारा दिये गये दान का वर्णन है यह अभिलेख दर्शाता है कि प्राचीन काल में नारियों ने धर्म कार्य में योगदान दिया। इसी प्रकार एरण अभिलेख से भानुगुप्त के सेनापति गोपराज की पत्नी की सती होने की जानकारी मिलती है।
4. अफसढ अभिलेखः- इस अभिलेख से मगध नरेश आदित्य सेन की पत्नी कोण देवी के द्वारा तालाब बनवाने की जानकारी मिलती है तथा आदित्य सेन की माता श्रीमती देवी ने राजनीतिक विश्वविधालय का निर्माण करवाया।
5. अपराजित अभिलेखः- उदयपुर के समीप नागदा के कडेश्वर मन्दिर से मिला है जिसमें विक्रम संवत 718 का उल्लेख है इस अभिलेख के द्वारा अपराजित के सेनापति वराह सिंह की पत्नी यशोमति द्वारा भवसागर पार करने हेतू कैटभ रिपू विष्णु का मन्दिर बनवाने का उल्लेख है।

इस प्रकार उपरोक्त विवरण में ऋग्वेदिक काल से पूर्व मध्य काल तक के साहित्यक अभिलेखिय साक्ष्य, विदेशी यात्रियों के वृतांत से शोध प्रबन्ध के लिये ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त करके प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

तृतीय अध्याय

वैदिक काल 600 B.C तक महिलाओं का राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक योगदान।

i. वैदिक काल में महिलाओं का राजनीतिक योगदान
ii. वैदिक काल में महिलाओं का सामाजिक योगदान
iii. वैदिक काल में महिलाओं का आर्थिक योगदान

राजनीतिक योगदान

वैदिक कालीन महिलाओं ने राजनीतिक योगदान देकर समाज को धर्म के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया था ऋग्वेद में एक ऐसी महिला का आख्यान आया हैए जिसने दान.दक्षिणा को प्रारम्भ किया था। दान प्रति पादिका दक्षिणा का दृष्ट सूम्त 107 हैए जो ऋग्वेद के 10 वे मण्डल में पाया जाता है। दान हेतू अधिक प्रचार करने के कारण में इस महिला के राजनीतिक योगदान से इसी के नाम के अनुसार दान का नाम दक्षिणा पड़ गया।

इसी प्रकार अनेक स्त्रियों के नाम वैदिक साहित्य में प्राप्त होते है। ऋग्वेद के 10 वे मण्डल के 109 वे सूम्त में जुहू नामक विदूषी महिला ने 7 मन्त्रों की रचना में योगदान किया था। यह योगदान महिलाओं को उच्च सामाजिक स्थान प्रदान करता है। इस काल की महिलाओं ने विद्वता को प्राप्त कर ऋषिका का पद ग्रहण कियाए और समाज में धर्म का संदेश प्रसारित कियाए उसने अनेक वैदिक मन्त्रों की रचना की और अपने राजनीतिक योगदान को सिद्ध कर दिया। इस प्रकार इस युग में हमें महिलाओं के राजनीतिक कृत्यों का पता चलता है।

प्राचीनकाल में महिलाओं के योगदान के स्रोत वैदिक काल से अत्यधिक मात्र में प्राप्त होते हैए इस समय के साहित्य स्रोत हमारे पास उपलब्ध हैए अपने इस अध्याय में मैने वैदिक काल में महिलाओं का राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक योगदान को रखा है। इसमें भी मैने अपने इस अध्याय खण्ड में महिलाओं द्वारा राजनीति में यि गये योगदान को रखा है.

सामाजिक योगदान

भारतीय समाज सदैव से ही महिला शक्ति का ऋणी रहा है। यदि हम वैदिक काल का गहनता से अध्ययन करते है, तो पाते है कि वैदिक काल में भी सभी कालों की भांति समाज में चहुमुखी विकास में नारी का योगदान रहा है। वह योगदान चाहे सामाजिक या आर्थिक सभी क्षेत्रों दृष्टिगोचर होता है। वैदिक युग में महिलाओं की तुलना उषा से की गई है, ऋग्वेद में कहा गया है कि जैसे उषा सबको सुख देने वाली होती है वैसे ही महिलाएँ समाज को सुख देने वाली होती है।

इस तथ्य से हम इस समय नारी के सामाजिक योगदान का बहुत आसानी ने आँकलन कर सकते है। जिस प्रकार अँधेरे जगत में उषा का योगदान है उसी प्रकार महिला योगदान भी समाज में प्रकाश फैलाने का रहा है। वैदिक युग में नारी के प्रकाशवान चरित्र के कारण ही उस युग में प्रकाश फैला था। ऋग्वेद में कहा गया है। कि उषा के बिना दिन, सुख व राज्य के कार्य सिद्ध नहीं होते, वैसे ही समीचीन महिला के बिना भी सुख व राज्य के कार्य सिद्ध नहीं होते।

वैदिक काल में नारी का महत्व बहुत अधिक था क्योंकि वह राज्य कार्यों में भाग लेकर राज्य का पथ प्रदर्शक बनी हुई थी। समाज में अराजकता का आशय राज्य के कार्यों में विशेष प्रकार से महिलाओं ने योगदान दिया इन्होंने ही राज्य में सुख का संचार किया, इस प्रकार कहा जा सकता है कि महिलाओं ने राज्य कार्यों में योगदान दिया। अंधेरे से लिया जाता है, और सद्भव व सज्जनता का आशय दिन से किया जाता है। इसीलिए वैदिक युगीन महिलाओं को उषा के समान मानकर समाज के चहुमुखी विकास में योगदान की आशा की जाती थी। ये आशा इसलिए की जाती थी क्योंकि वैदिक कालीन महिलाओं ने सामाजिक योगदान दिया था।

वैदिक कालीन नारी के योगदान के कारण उसकी गुणों की तुलना उषा से की गई है। वैदिक युग में यह धारणा रही है कि जिस प्रकार सभी वस्तुएँ विधमान तो होती है किन्तु उषा के अभाव में दृष्टिगोचर नहीं होती, इसी प्रकार विदूषी नारी के अभाव में समाज सुशोभित नहीं होता। यहाँ पर नारी ने अपने गुणों से समाज को प्रकाशवान बनाने में अपना पूरा योगदान दिया।

वैदिक युग में नारी एक कुशल प्रबन्धक भी थी क्योंकि एक स्थान पर ऋग्वेद में कहा गया है, मनुष्य को चाहिये की सब ऋतुओं से सब सुख देने वाले घरों का प्रबन्ध कर उन्हे सभी सुख देने वाली वस्तुओं से सुशोभित कर घर की महिलाओं को सौंप देना चाहिये। इस उक्ति से यह स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक युगीन महिलाओं में सामाजिक प्रबन्धक का उच्च कोटि का गुण मौजूद था। किसी भी समाज के विकास में प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। और ऐसे महत्वपूर्ण कार्य का महिलाओं द्वारा किया गया, प्रबन्ध के गुण महिलाओं में प्रमुखता से पाया जाता है जो कि वैदिक काल में भी विधमान था, इस प्रकार हम नारी के इस प्रबन्धकीय गुण के द्वारा समाज में किये गये सहयोग महिलाओं द्वारा किया जाना उस समय की महिलाओं की महत्ता को दर्शाता है। ऋग्वेद में कहा गया है कि जैसे विधा गुण कर्म और स्वभाव वाले पुरूष हों उनकी स्त्री भी वैसी ही होनी ठीक है। स्त्री अपने समान व पुरूष अपने समान स्त्रियों का वरण करे और सभी सामाजिक कार्यों को प्रतिपादित करें। महिलाओं के स्वयंवर से वैदिक कालीन सामाजिक दशा को बोध हो जाता है। महिलाओं के गुणी होने से उनके स्वयंवर में उनके समान गुण के पुरूष का उसके वरण का आकांक्षी होना इस बात को सिद्ध करता है कि इस काल में नारी ने समाज को गुणी बनाने में बहुत बड़ा योगदान दिया था। वैदिक काल में अनेक स्थानांे पर हमें नारी के सहयोग के अनेकों उदाहरण हमें देखने को मिलते है। एक स्थान पर कहा गया है कि ओखली का कार्य भी महिलाओं को करना चाहिये और महिलाओं को इस विधा में भी निपुण बताया गया है। कहा गया है कि धान्य फसलों का निष्तारण जो ओखली में ही होता है। उस कार्य को महिलाएँ बड़े ही गुणी तरीके से करती है।

(ग) आर्थिक योगदान

वैदिक काल में जिस प्रकार महिलाओं ने राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में योगदान दिया था उसी प्रकार आर्थिक क्षेत्र में भी विशेष योगदान दिया था। और उस काल की महिलाओं ने सिद्ध कर दिया कि वे किसी भी क्षेत्र में योगदान देने में पीछे नहीं हटती, महिलाओं के आर्थिक महत्व की गति विधियों को देखते हुये उसे सम्पत्ति की अधिकारिणी स्वीकार किया गया था। पुत्र ने होने की स्थिति में उसे दत्तक पुत्र से अच्छा माना गया है।

जिस प्रकार मनुष्य हवा और पानी के बगैर जीवित नहीं रह सकता इसी प्रकार पुरूष और महिला एक दूसरे के बगैर नहीं रह सकते तथा उन दोनों के हित एक दूसरे के हितों से परस्पर लाभन्वित होते है, दम्पति शब्द का प्रयोग परिवारिक सम्पत्ति पर पति-पत्नी के समान अधिकार का स्पष्ट प्रमाण है। दम्पत्ति शब्द नारी के नर से अटूट संबंध का प्रतीक है।

वैदिक युग में प्रारम्भ हुआ स्त्री धन के द्वारा महिलाओं ने उसके द्वारा गृहोपयोगी वस्तुओं का निर्माण कराकर बहुत योगदान दियाँ, स्त्रीधन के बारे में वृहत रूप से चर्चा अर्थशास्त्र में की गई है, इस धन पर केवल महिलाओं का ही अधिकार माना जाता था जिससे महिलाओं ने उससे वस्त्र व आभूषण व गृहोपयोगी वस्तुएँ बनवाकर आर्थिक योगदान दिया। इस प्रकार वैदिक युग में महिलाओं ने अपने स्त्री धन से बहुत योगदान दिया और घर को सजाया, साँवारा था। घर को सजाने सँवारने के एक विशेष कला नारियों में इस युग में भी रही थी। क्योंकि स्त्रीधन पर महिलाओं का पूर्ण अधिकार होता था, और वे इस धन अपनी इच्छानुसार कहीं भी खर्च कर सकती थीं। स्त्रीधन को नारी, संतान, वधु या पुत्र के लालन, पालन के लिए खर्च करती थी और अपने इस धन के द्वारा वह सामाजिक कार्यों में भी योगदान देती थी। कुछ विशेष परिस्थितियों में स्त्रीधन को महिला के पति द्वारा खर्च किया जा सकता था जैसे-अकाल पड़ने पर बीमारी में स्त्रीधन आकास्मिक आवश्यकताओं के लिये होता था।

आर्थिक योगदान

वैदिक काल में जिस प्रकार महिलाओं ने राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में योगदान दिया था उसी प्रकार आर्थिक क्षेत्र में भी विशेष योगदान दिया था। और उस काल की महिलाओं ने सिद्ध कर दिया कि वे किसी भी क्षेत्र में योगदान देने में पीछे नहीं हटतीए महिलाओं के आर्थिक महत्व की गति विधियों को देखते हुये उसे सम्पत्ति की अधिकारिणी स्वीकार किया गया था। पुत्र ने होने की स्थिति में उसे दत्तक पुत्र से अच्छा माना गया है।

जिस प्रकार मनुष्य हवा और पानी के बगैर जीवित नहीं रह सकता इसी प्रकार पुरूष और महिला एक दूसरे के बगैर नहीं रह सकते तथा उन दोनों के हित एक दूसरे के हितों से परस्पर लाभन्वित होते हैए दम्पति शब्द का प्रयोग परिवारिक सम्पत्ति पर पति.पत्नी के समान अधिकार का स्पष्ट प्रमाण है। दम्पत्ति शब्द नारी के नर से अटूट संबंध का प्रतीक है।

वैदिक युग में प्रारम्भ हुआ स्त्री धन के द्वारा महिलाओं ने उसके द्वारा गृहोपयोगी वस्तुओं का निर्माण कराकर बहुत योगदान दियाए स्त्रीधन के बारे में वृहत रूप से चर्चा अर्थशास्त्र में की गई हैए इस धन पर केवल महिलाओं का ही अधिकार माना जाता था जिससे महिलाओं ने उससे वस्त्र व आभूषण व गृहोपयोगी वस्तुएँ बनवाकर आर्थिक योगदान दिया। इस प्रकार वैदिक युग में महिलाओं ने अपने स्त्री धन से बहुत योगदान दिया और घर को सजायाए साँवारा था। घर को सजाने सँवारने के एक विशेष कला नारियों में इस युग में भी रही थी। क्योंकि स्त्रीधन पर महिलाओं का पूर्ण अधिकार होता थाए और वे इस धन अपनी इच्छानुसार कहीं भी खर्च कर सकती थीं। स्त्रीधन को नारीए संतानए वधु या पुत्र के लालनए पालन के लिए खर्च करती थी और अपने इस धन के द्वारा वह सामाजिक कार्यों में भी योगदान देती थी। कुछ विशेष परिस्थितियों में स्त्रीधन को महिला के पति द्वारा खर्च किया जा सकता था जैसे.अकाल पड़ने पर बीमारी में स्त्रीधन आकास्मिक आवश्यकताओं के लिये होता था।

चतुर्थ अध्याय

महाकाव्य, स्मृति व पुराण काल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान–

i. राजनीतिक योगदान
ii. सामाजिक योगदान
iii. आर्थिक योगदान

चतुर्थ अध्याय

महाकाव्य, स्मृति व पुराण काल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एंव आर्थिक योगदान

वैदिक काल में महिलाओं ने जो विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान दिया और समाज में अपना उच्च स्थान प्राप्त किया, बाद के समय का अर्थात महाकाव्य, स्मृति व पुराण काल का सूक्ष्य अध्ययन करने पर हमें पता चलता है कि समाज में महिलाओं के प्रति सोच दूषित होने लगी थी, और महिलाओं की स्वतन्त्रता में कमीं आने लगी थी, किन्तु महिलाओं ने इतना सब कुछ होने के बावजूद अपने योगदान में कोई कमी नहीं की इस काल की महिलाओं के योगदान को निम्न प्रकार प्रकाशित किया गया है-

राजनीतिक योगदान- यज्ञ भारतीय समाज में भगवान के रूप में माना जाता है, और उसके बढ़ाने वाली घृत धाराएँ पावित्रता की प्रतीक है, गृहस्थ कार्य भी एक प्रकार या यज्ञ है जब इसकी लपटे मंद पड़ने लगती है तो पत्नी उसे अपने सहयोग से प्रदीप्त करती है। सापपदी की अन्तिम प्रतिज्ञा में पति, पत्नी को सखा कहकर सम्बोधित करता है। सखा के इस भाव का परिस्फुरण वाल्मीकि रामायण में उस समय भगवान राघवेन्द्र के मुख से होता है, जब वे सीता के अपहरण के बाद कहते है-सीता के सभी भाव मुझमंे समाहित थे और मेरे सीता में। भगवान रामचन्द्र का यह वाक्य महाकाव्य काल में नारी के पुरूष के साथ एकीकार को निश्चित रूप से प्रमाणित करता है। इस एकीकार को निश्चित रूप से प्रमाणित करता है। इस एकीकार के द्वारा ही श्री राम चन्द्र जी कभी भी सीता के बगैर राजनीतिक कार्य नहीं करते थे। और यदि करते तो उनकी मूर्ति के साथ।

वैदिक कालीन महिलाएँ पूजा-अर्चना करने में पारंगत थी और इनका समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को भी भलि भांति जानती थी। वे जानती थी ही हवन आदि में जो सामग्री हम देवता को अर्पित कर देते है, देवता उनसे प्रसन्न होकर हमें कई गुना वापिस कर देते है। वैदिक महिलाएँ दूध और हवन से इन्द्र की पूजा करती थी। इस प्रकार वे सामाजिक राजनीतिक कार्य में योगदान किया करती थी। इन्द्र की पूजा द्वारा वे पृथ्वी पर होने वाली आवश्यकताओं को पूरा करती थी।

वैदिक महिलाएँ दूध और हवन से इन्द्र की पूजा करती थी। इस प्रकार वे सामाजिक राजनीतिक कार्य में योगदान किया करती थी। इन्द्र की पूजा द्वारा वे पृथ्वी पर होने वाली आवश्यकताओं को पूरा करती थी।

वैदिक कालीन महिलाएँ वैदिक मन्त्रों का उच्चारण एक दम सही प्रकार से कर लेती थी। और इन मन्त्र उच्चारणों से जो वातावरण में सकारात्मक उर्जा का प्रसार कर दिया करती थी। महिलाओं के साथ-साथ कन्याएँ भी मन्त्रोच्चारण किया करती थी। कन्याएँ स्वयं ही यज्ञ अनुष्ठान मिलता है, जो प्रातः काल में स्नान करके सोमरस लेकर लौटती है और यज्ञ के द्वारा इन्द्र को सोमरस प्रदान करती है। यज्ञादि कन्याएँ अकेले ही कर लिया करती थी।

इन राजनीतिक अनुष्ठानों का प्रभाव समाज पर पड़ा और समाज बुराईयों से रहित होने लगा, उस समय के समाज में मुख्यतः एक विवाह का प्रचलन हो गया इस एक विवाह के प्रचलन में भी बहुत बड़ी भूमिका यज्ञ आदि अनुष्ठानों की थी। और इन यज्ञ अनुष्ठानों में महिलाओं ने महती भूमिका निभाई थी, इसी कारण समाज में कुसंगतियों में कमी आने लगी और समाज बुराइयों से रहित हो गया।

इस काल में महिलाओं द्वारा युद्ध संचालन में अपनी योग्यता को दर्शाया था। शिशुपालवधम नाटक में महिलाओं द्वारा युद्ध संचालन का वर्णन मिलता है। शिशुपालवधम महाकाव्य काल का नाटक है। इस नाटक के द्वारा हमे तत्कालीन समाज में महिलाओं के राजनीतिक योगदान का पता चलता है। महिलाओं ने इस काल में युद्ध संचालन करके यह दिखा दिया कि महिलाएॅ प्रत्येक प्रकार से राजनीतिक समझ रखती है। यह महिलाओं की विद्वता को भी दर्शाता है।

सामाजिक योगदान- इस कालखण्ड महिलाओं ने सामाजिक योगदान भी किया था। महाभारत में एक स्थान पर दर्शाया गया है। कि गांधारी ने अपने पति को अंधा पाया था, इसके बावजूद गांधारी ने धृष्टराष्ट्र को अपना पति मान लिया और उसके जैसा ही जीवन जीने के लिये अपनी आँखों पर पट्टी तो बाँध ली। किन्तु वे हमेशा प्रज्ञा चघु बनी रही और अनेक स्थानों पर महाराज व उनके पुत्र दुर्योधन को उचित सलाह देती रही। भले ही वे उसे माने या न मानें पुराणों में नारी को निर्मल और पवित्र बतलाया है, और पुराणों के अनुसार नारी किसी भी प्रकार से मलिन नही हो सकती क्योंकि ईश्वर ने उसे स्वतः ही स्वच्छ होने का वरदान दिया है। अग्निपुराण के अनुसार ऋतु के पश्चात नारी निर्मल हो जाती है। यह उसकी पवित्रता की शक्ति है।

माघ द्वारा रचित नाटक शिशुपालवधम् भी ऐसे अनेक आख्यान प्रस्तुत करता है कि जिससे महिलाओं के सामाजिक सहयोग का वर्णन मिलता है, इस नाटक में दर्शाया गया है कि महिलाएँ भी सेना के साथ रहती थी। रानियां पालकियों में चलती थी, तथा उनकी सखियां घोड़ों पर व दासियाँ पैदल, चला करती थी। कई स्थानों पर महिलाओं ने युद्ध का संचालन किया था। महाकाव्य काल में भी वैदिक काल की ही तरह महिलाओं ने युद्धों में भाग लिया राजा दशरथ की रानी कैकई कई बार युद्ध भूमि में गयी व दशरथ की अनेकों बार मद्द भी की थी।

स्मृति साहित्यों में भी नारी के सामाजिक सहयोग के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है इन स्मृतियों में भी नारी के सामाजिक सहयोग को देखते हुये उसे पूज्यनीय बतलाया गया है। यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता।

इस काल में महिलाओं के साथ-साथ गणिकाएँ भी सामाजिक योगदान में विशेष महत्व था, जब कृष्ण शांति का सन्देश लेकर कोरवों के पास गए थें तो गणिकाएँ भी उनका स्वागत करने आई थी। इस प्रकार महाकाव्य काल में गणिकाओं ने भी समाज में अपना स्थान बना रखा था और वे सभी प्रकार से समाज के कार्यों में योगदान करती थी। गणिकाएँ नगर वधू के रूप में भी सम्मानित की जाती थी, और समाज में उनका स्थान महत्वपूर्ण माना जाता था। उनका

इस प्रकार महाकाव्य काल में गणिकाओं ने भी समाज में अपना स्थान बना रखा था और वे सभी प्रकार से समाज के कार्यों में योगदान करती थी। गणिकाएँ नगर वधू के रूप में भी सम्मानित की जाती थी, और समाज में उनका स्थान महत्वपूर्ण माना जाता था। उनका रहन-सहन उच्च कोटि का होता था और वे समाज में उच्च स्थान प्राप्त करती थी। गणिकाओं का अपना महत्व होता था क्योंकि ये राज्य की आमदनी का जारिया भी होती थी।

ब्रहामण ग्रथों में भी महिलाओं के सामाजिक योगदान को देखते हुये उन्हे दाय आदि सम्पत्ति की अधिकारिणी माना गया है। इस प्रकार कहा गया है कि पत्नी पति के दाय की उत्तराधिकारिणी होती है। इस प्रकार इस युग में महिलाओं के द्वारा उसे मिली सम्पत्ति के अधिकार ने उसे समाज में स्थान दिलवा दिया और महिलाओं ने भी इस सम्पत्ति से अनेक सामाजिक कार्यों में योगदान किया।

अर्थात जहाँ नारी की पूजा की जाती है वहाँ देवताओं का निवास स्थान होता है, इसीलिये नारी पूज्यनीय है और उसका सभी प्रकार से आदर किया जाना चाहिये।

इस युग में गणिकाओं ने भी अनेक प्रकार से अपना योगदान दिया था, इन गणिकाओं ने अनेक प्रकार से योगदान दिया था। गणिकाएँ केवल भोग विलास की वस्तु नही मानी गई वरन वे राज्य के युद्ध में भेदिये का कार्य भी करती थी। उन्हे उनके सहयोग के लिये राजय से वेतन भी प्राप्त होता था। इस वेतन के द्वारा वे अपने सौक सज्जा का सामान लेती थी।

महाभारत में गृहिणी को घर माना गया है और नारी के योगदान को दृष्टि में रखते हुये उसे सुरक्षा प्रदान की गई है। महाभारत में एक स्थान पर कहा गया है कि गृहिणी ही गृह है, गुरू एंव ब्राहमण की भांति महिला भी सभी दशाओं में अवध्य है। वह त्रिवर्ग धर्म, अर्थ, काम का मूल है। नारी महिमा को ब्राहमण ग्रन्थों मंे भी स्थान दिया गया है, पुरूष को स्त्री के बिना अधूरा बतलाया गया है।

आर्थिक योगदानः- इस काल में महिलाओं ने आर्थिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया वैदिक काल की भांति महिलाओं ने आर्थिक क्रिया कलापों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। महाभारत में भी कन्या के स्वरूप को पुत्र के समकक्ष स्वीकार किया गया है। कन्याओं ने अनेक घरेलू कार्य जो सीधे अर्थ से जुडे थे में बहुत योगदान दिया इसी कारण उन्हे सम्पत्ति की अधिकारिणी भी माना गया, यदि किसी पुरूष के केवल कन्याएँ हों तो वे पिता की समग्र सम्पत्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त करें।

इस काल में जो कन्याएँ अविवाहित रहती थी व भी पिता से प्राप्त धन से घर की अनेक आर्थिक क्रियाओं में सक्रिय योगदान देती थी। ब्राहमण ग्रन्थों में भी नारी के आर्थिक योगदान की विशेष चर्चा की गई है। शतपथ ब्राहमण में भी पत्नी को पारिणाहय कहा गया है इसका प्रकार नारी का घर के आर्थिक क्रियाओं पर नियन्त्रण सिद्ध होता है। इन आर्थिक क्रियाओं से नारी ने घर के उत्थान में ब्रहामण ग्रन्थों में पत्नी को पारिणाहय अर्थात घर की वस्तुओं की स्वमिनी स्वीकार किया गया है, शतपथ ब्राहमण से ज्ञात होता है कि पत्नी, पति के दाय की उत्तराधिकारिणी होती थी, इस दाय से ही नारी आर्थिक योगदान दिया करती थी। काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, महिलाओं को जो भी दाय प्राप्त होता था उसे वे सभी प्रकार से घर के कार्यों पर खर्च कर दिया करती थी। और इससे गृहस्थ के कार्य सुचारू रूप से चलते थे।

ब्राहमण ग्रन्थों में दासियों द्वारा आर्थिक योगदान के प्रमाण प्राप्त होते हैं दासियों द्वारा अनेक प्रकार के आर्थिक कार्य सम्पन्न किये जाते थे जैसे जलाश्य से पानी भरकर लाया, कृषि कार्य करना ऐतरेय ब्राहमण से ज्ञान होता है कि अंग के राजा ने आत्रेय पुरोहित को विजय के उपरांत बन्दी बनाकर लाई गई दस हजार नारियों को दासियों के रूप में पुरोहित को दान दिया। इस प्रकार हम देखते है कि महिलाओं ने दासियों के रूप में भी आर्थिक योगदान दिया। इससे दासियों की आर्थिक स्थिति का पता चल जाता है।

प्राचीन काल से ही यह विचार प्रकट किया जाता है कि मनुष्य को कर्म के आधार पर वर्गों में बाँट दिया जाये तो दासियों ने अपने वर्ग के अनुसार कार्य किया जिससे और लोगों को जिनकी इन्होने सेवा की थी उसके बदले समय में जरूर अन्य आर्थिक क्रियाओं में योगदान दिया था तो इसमें दासियों का भी योगदान मिल जाता है। इस धन को ये अपने खर्च के लिये भी रखती थी और इस धन पर राज्य द्वारा कर वसूला जाता था जो राज्य के अनेक उपयोगी कार्यों को सम्पादित करता था।

विदूषी स्त्रीयां आचार्य बनकर भी समाज में अपना आर्थिक योगदान दिया करती थी और अनेक प्रकार के अर्थ संबंधी कार्यों में योगदान दिया करती थी। आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भरता के लिए महिलाएँ विभिन्न प्रकार की जीविका अपनाती थी। और समाज द्वारा उन पर कोई प्रतिबन्ध नही था। यह उनकी अर्थ के प्रति जानकारी रखनाही था।

स्मृति काल में घर का सारा भार महिलाओं के उपर था। महिलाओं को वाल्यावस्था से ही घर के प्रत्येक कार्य में सहयोग देना सिखाया जाता था। ये महिलाएँ घर की कर्ता धरता होती थी। इन महिलाओं को प्रतिदिन का हिसाब किताब रखना पड़ता था, वार्षिक आय-व्यय का लेखा जोखा भी रखना पड़ता था। इस प्रकार स्मृति काल में महिलाओं ने आर्थिक क्रियाओं में सभी प्रकार से नियंत्रण कर लिया था। महिलाएँ प्रत्येक दिन के खर्चे के हिसाब से अपने खर्चे का लेखा जोखा बना लेती थी, महिलाएँ रोजमर्रा के हिसाब-किताब के साथ-साथ साल भर का लेखा-जोखा भी तैयाद करती थी। जिसे आज-कल की भाषा में बजट कहते है।

पंचम अध्याय

बौद्ध, जैन, मौर्य व मौर्योत्तर काल तक महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान–

i. राजनीतिक योगदान
ii. सामाजिक योगदान
iii. आर्थिक योगदान

(क.) राजनीतिक योगदानः-बौद्ध साहित्यों में अनेक स्थानों

पर महिलाओं के राजनीतिक योगदान का वर्णन मिल जाता है ऐसी ही एक विदूषी बौद्ध विभुणी थी चन्द्रा इसकी ओजस्वनी वाणी त्रिपिटक में उपलब्ध हैं ये बौद्ध साहित्य की एक महत्वपूर्ण महिला थी। चन्द्रा अपने संबंध में उदात वाणी कहती है-अहो अमोध था देवी का उपदेश मैं आज तीनों विधाओं की ज्ञाता हूँ सब चित्तमलों से विमुक्त हूँ। ये बौद्ध विक्षुणी अति उत्तम कोटि की थी, और ब्रहम ज्ञान से पूर्ण थी।

मद्र देश की राजकुमारी खेमा भी बौद्ध विक्षुणी थी, और एक विदूषी महिला थी, इसका विवाह मगध के राजा बिम्बिसार से हुआ था। गौतम बुद्ध ज्ञान प्राप्त करने केबाद प्रथम राजा बिम्बिसार के पास गये जो उसके प्रथम श्रावक के रूप में प्रसिद्ध हैं खेमा ने विधि पूर्वक प्रवज्या ग्रहण की बुद्ध ने खेमा को महाप्रज्ञावती इस ब्रहम ज्ञान द्वारा ही नारियों ने ब्रहम को पहचान कर सभी जीवों के प्रति दया भाव रखती थी। और अथर्ववेद के वाक्य अहम ब्रहमास्मि का पालन करती हुई प्रतीत होती है की उपाधि प्रदान की। इसी प्रकार जैन साहित्यों में चन्दना का उदाहरण दिया जा सकता है, जैनों में चन्दना वन्दनीय है, चन्दना को सती का गया है। जैन धर्म में प्रसिद्ध सोलह सतियों के कथानक उपलब्ध है इनमें चन्दना का भी उल्लेख है इन्होने धर्म आदि के कार्य में अनेक प्रकार से योगदान दिया था। चन्दना महान राजनीतिक थी। मौर्य काल भी महिलाएँ अपनी जातियों के कुल में भी केवल उसी स्थिति में जा सकती थी जहाँ कोई मृत्यु हो गयी हो या कोई रोगी हो या अन्य कोई विपत्ति आयी हो तीर्थयात्रा आदि के प्रयोजन में भ स्त्रियों को जाने की अनुमति थी। इस प्रकार महिलाओं ने धर्मिक तीर्थ यात्राओं में भी योगदान दिया।

जैन अंग साहित्यों में भी अनेक महिलाओं के राजनीतिक योगदान के वर्णन मिल जाते है इसी प्रकार की खेमा को महा प्रज्ञावती उपाधि देकर गौतम बुद्ध ने तत्कालीन नारियों की विद्वता की पुष्टि कर दी इस प्रकार हम पाते है कि जो मनुष्य स्वय ज्ञान का भगवान था, उसने भी तत्कालीन नारियों की विद्वता की प्रशंसा की है।

एक जैन पारिव्राजिका का वर्णन मिलता है, जैन अंग साहित्य में चोखा परिव्राजिका का वर्णन आता है, इन्हे एक परिव्राजिका के रूप में चित्रित किया गया है। इनके सम्मान में जितशस्त्रु आदि राजाओं द्वारा इनके राजनीतिक कृत्यों के लिये, सिंहासन से उठाकर खड़े होने का वर्णन है। इस प्रकार जैन साहित्यों से इन बातों की पुष्टि हो जाती है कि तत्कालीन महिलाओं ने कितने महत्वपूर्ण राजनीतिक कार्य किये कि उनके सम्मान में राजाओं ने भी अपना शीश झुकाया था। इस प्रकार हम तत्कालीन नारी के राजनीतिक योगदान को समझ सकते है।

(ख.) सामजिक योगदान- किसी राष्ट्र की सभ्यता एंव संस्कृति के निर्माण तथा विकास में नारी का योगदान बहुत महत्वपूर्ण होता है। भारत में धर्मशात्रियों ने नारी को परम इष्ट की श्रेणी में रखा है। इस सँदर्भ में मनु लिखते है जहाँ नारी की उपासना होती है वहाँ देवता निवास करते है। नारी की उपासना से तात्पर्य उसके सम्मान से ही किया गया है। इस प्रकार प्रकृति में देने वालों को देवता कहा जाता है, इसीलिये जिस समाज में नारी का सम्मान होता है वे समाज देवताओं की कृपा पाते हैं। प्रत्येक भारतीय साहित्य में किसी न किसी रूप में नारी को पुरू से हीन माना गया है जो कि समाज की दूषित मानसिकता का परिणाम है, उसे भोग की वस्तु मानकर अपमान किया गया है, किन्तु समाज की यह अवनति का कारण भी बना जिस समाज में नारी का अपमान किया गया है वह समाज सदैव अवनति किया है वह समाज सदैव उन्नति के मार्ग पर चला है। और दिन पर दिन नई उचाइयों को छता चला गया। बौद्ध साहित्यों में अनेक सुयाग्या और सुशिक्षित स्त्रियों के उदाहरण मिलते हैं भिक्षुणी खेमा अपने समय की अत्यन्त विदूषी महिला थी उसकी विदवता की प्रशंसा सुनकर स्वयं कौशल राज प्रसेनजित उसकी सेवा में गया था। सुभद्रा नाम की दूसरी भिक्षुणी का संयुक्त निकाय में उल्लेख है वह अपने व्याख्यान से अमृत वर्षा करती थी। बौद्ध साहित्यों में प्रकट होता है कि तत्कालीन वेश्याएँ भी पर्याप्त रूप से शिक्षित और सुसंस्कृत होती थी। इस संबंध में आम्रपाली का उल्लेख विशेष महत्वपूर्ण है।

(ग.) आर्थिक योगदान- कौटिल्य का अर्थशास्त्र में भी अनेक स्थानों पर महिलाओं के योगदान की चर्चा की गई है इस काल में कन्याओं ने भी पिता से प्राप्त धन से आर्थिक कार्यों को सम्पन्न किया था। कौटिल्य भी पुत्री को दायद मानने के पक्ष में था, कौटिल्य के अनुसार अभातृ कन्या को उत्तराधिकारिणी घोषित किया। अपुत्र का धन उसके सहोदर भाई अथवा सहजीवी कन्या प्राप्त करे।

थेरीगाथा सेज्ञात होता है कि यदि पिता सन्यास लेता है और उसका कोई पुत्र न हो तो पुत्री ही सम्पूर्ण सम्पत्ति की स्वामिनी होती थी। जो पुत्री परिस्थितिवश अविवाहित रहकर पिता के घर में ही जीवन बिताती थी वह पिता की सम्पत्ति की अधिकारिणी होती थी। क्यांेकि अविवाहित होने के कारण वह अपने ससुराल न जाकर पिता के ही घर पर आर्थिक क्रियाओं में सहयोग करती थी। और इन कन्याओं को इनके आर्थिक योगदान के कारण किसी भी दशा में बोझ न ही समझा जाता था, क्योंकि ये कन्याऐ अपने पिता के घर पर राजनीतिक व आर्थिक कार्यों में योगदान दिया था, और अपने कुल व पिता का नाम रोशन किया ये सब इनके योगदान के कारण ही संभव हुआ।

विधवाओं ने भी आर्थिक क्रियाकिलापों में अनेक प्रकार से योगदान दिया था, अनेक कार्य जैसे चटाई बुनना, पंखे बनाना, कपड़ा पर कढ़ाई का काम करना आदि कार्य किये जाते थे तथा इन कार्यों को करने के लिए उनके पास धन की व्यवस्था राज्य से प्राप्त धन से की जाती थी। कौटिल्य ने दायदों के अभाव मंे राजा को यह अधिकार दिया कि मृत पुरूष का धन सम्पत्ति का अधिग्रहण कर ले तथा विधवा के जीवन निर्वाह के लिये कुछ धन अवश्य दें। इस धन के द्वारा ही विधवाओं का जीवन सरल बना।

इस काल में महिलाओं को सम्पत्ति के बहुत अधिकार प्राप्त थें उन्हें विवाह के समय भी बहुत सम्पत्ति प्राप्त हो जाती थी अर्थशास्त्र में दो प्रकार के स्त्रीधन का वर्णन है-वृति इससे तात्पर्य जीवन निर्वाह के साधन तथा नगद धन राशि से है, आवध्य शरीर पर धारण किये जाने वाले आभूषण जवाहरात आदि इसकी कोई सीमा नहीं थी। कुछ सम्पत्ति कन्या को विवाह के समय प्राप्त होती थी तथा बाद में उसके पति द्वारा उसे दी जाती थी ऐसी सम्पत्ति को सौदायिक सम्पत्ति कहते है इस धन पर महिला का पूर्ण अधिकार होता था और व इससे अनेक प्रकार के सार्वजनिक करती थी। इन सार्वजनिक कार्यों ने समाज में महिलाओं का स्थान उच्च कोटि का बना दिया क्योंकि परिवार के पालन में माता की भूमिका पिता से अधिक होती है, इसीलिये उसे गृहस्थ में अधिकार भी अधिक मिले इस अधिकारों का प्रयोग भलि-भांति कर महिलाओं ने योगदान बौद्ध साहित्यों में सुलसा नामक गणिका का उल्लेख है जो एक रात का एक हजार मुद्राएँ लेती थी। गणिकाएॅ धन-सम्पत्ति को अत्याधिक महत्व देती थी। एक जातक कथा के अनुसार एक श्रेष्ठीपुत्र गणिका को प्रतिदिन एक सहस्त्र कार्षापण मुद्राएँ प्रदान किया करता था।

गणिाकाओं को राज्य की तरफ से वेतन दिया जाता था इस वेतन का गणिकाएँ आधा वेतन घर को भरण पोषण के लिए दे देती थी तथा आधा वेतन अपने पास रख लेती थी जिसे वे कृषि कार्य, कुएँ बनवाने व तालाब निर्माण आदि में दे दिया करती थी।

गणिकाएँ अपनी दो दिन की आय राज्य को कर के रूप में दिया करती थी। गणिकाओं द्वारा देय कर को राज्य की आय का साधन माना जाता था। गणिकाएँ कुछ धन राज्य को देकर अपनी स्वतन्त्रता राज्य से खरीद लेती थी, गणिकाए अनेक क्रिया-कलापों में राज्य का हस्तक्षेप नहीं चाहती थी इसीलिए ये राज्य को धन देकर अपनी स्वतन्त्रता हासिल कर लेती थी। इस प्रकार हम देखते है कि इस समय की महिलाएँ अपने को विचारों से स्वतन्त्रता रखना चाहती थी और किसी भी प्रकार अपनी स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप नहीं करवाना चाहती थी ये उनके विचारों की स्वतन्त्रता की पुष्टि के लिये पर्याप्त है।

गणिकाओं द्वारा दिये गये कर के रूप में दिये गये धन से राज्य के अनेक आर्थिक कार्यों में सहयोग होता था। किसी भी राज्य का कोई भी सार्वजनिक कार्य धन से ही किया जा सकता है, इस प्रकार गणिकाओं से प्राप्त धन से राज्य के अनेक अर्थ संबंधी कार्य किये जाते होंगे। चाहे वैदिक युग हो या मौर्य युग नारी को दासी बनाकर रखना प्रभुत्व का कार्य माना जाता रहा है।

परिवार में दासी द्वारा किये गये कार्य से परिवार आर्थिक स्थिति पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है क्योंकि दासियां जो कार्य करती है उससे घर के अन्य सदस्यों को मुक्ति मिल जाती है और वे अन्य आर्थिक महत्व के कार्यों में अपना ध्यान ठीक प्रकार से दे पाते हैं। यधपि दासी प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक क्रियाओं में शामिल नहीं थी लेकिन उसके आर्थिक क्रियाओं का लाभ परिवार को मिलता था।

सतुभस्त जातक में एक ब्राहमण द्वारा शिक्षा से एकत्र धन द्वारा, दास-दासियों को क्रय करने का उल्लेख मिलता है। दासियों से बलपूर्वक श्रम करवाकर उसकी मजदूरी का उपभोग स्वामी द्वारा किया जाता था। इस प्रकार वह व्यक्ति जिसने दासियों से श्रम करवाकर अर्थ प्राप्त किया था काफी धनवान बना जाता था। इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से ही सही दासियां भी आर्थिक योगदान में महत्वपूर्ण स्थान रखती थी।

षष्ठम अध्याय

गुप्त काल व पूर्व मध्यकाल में महिलाओं का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान–

i. राजनीतिक योगदान
ii. सामाजिक योगदान
iii. आर्थिक योगदान

(क.) राजनीतिक योगदान- गुप्तकाल की महिलाओं ने धर्म के क्षेत्र में महान योगदान दिया था। कन्याएँ मन्दिरों में देवदासी के रूप में नृत्य गायन करती थी। मुल्तान के सूर्य मन्दिर के संबंध में हवेनसांग उल्लेख करता है किय यहाँ पर स्त्रियाँ ही गाती-बजाती है दीपक जलाती है तथा सुगंध पुष्प इत्यादि से पूजा अर्चना करती थी। हेनसांग ने अपने वर्णन में जो देवदासियों का वर्णन किया है वे मन्दिर निर्माण के प्राचीन काल से ही विधमान थी ऐसा होने की अनेक स्थानों पर पुष्टि हो चुकी है। इस प्रकार हमे ज्ञात होता है कि इस काल में मंदिर जो धर्म का प्रतीक थे महिलाओ द्वारा इनकी पूजा अर्चना में सहयोग किया जाता था।

महिलाओं को नृत्य, संगीत, वाघ काव्य आदि की शिक्षा प्रदान की जाती थी जिससे की यें राजनीतिक कार्यों में अपना सहयोग कर सके देवदासियों के अतिरिक्त उच्च कुल की महिलाएँ भी राजनीतिक कार्यों में सहयोग करती थीं और नृत्यकला में भी प्रवीण होती थीं।

पूर्व-मध्य काल में अनेक महिलाओं ने समाज में राजीतिक योगदान दिया था। कश्मीर के शासक क्षेम गुप्त 950ई0 से 958ई0 दिद्दा ने अपने पति को शासन चलाने में मद्द की उसके सिक्कों पर दि क्षेम उत्कीर्ण है। कश्मीर की रानी दिद्दा ने अपने पति की मृत्यु हो जाने के बाद शासन किया व अपने राजनीतिक योगदान को दर्शाया। इसी प्रकार सांभर राजपूताना चैहान मुखिया की पत्नी सोमला देवी के सिक्के प्राप्त हुये हैं। इन सिक्कों से सोमला देवी के राजनीतिक दक्षता का पता चलता है।

इस प्रकार से कश्मीर की दिद्दा हो या सांभर चैहान मुखिया की पत्नी सोमला देवी की राजनीतिक समझ का पता चलाता है। सांभर जिले में सोमला देवी के सिक्के प्राप्त हुये है। चालुम्य शासन विक्रमादित्य षष्टम की रानी लक्ष्मी देवी ने कम्याणी में शासन किया थी। इस प्रकार पूर्व-मध्य काल में नारी के राजनीतिक योगदान का पता चलता है।

गुप्त कालीन व पूर्व मध्य काल की विधवाओं ने भी राजनीतिक कार्यों में बढचढ कर योगदान दिया ये अकसर राजनीतिक जीवन जीना पसन्द करती थी। धर्म युक्त विधवाएँ सम्मान की पात्र होती थी। विधवाएँ अनेक प्रकार से राजनीतिक सहयोगिनी होती थी वे धर्म के लिये किसी का भी त्याग कर सकती थी, क्योंकि वे धर्म को सभी वस्तुओं से श्रेष्ठ मानती थीं।

गुप्त काल में जब रामगुप्त अपनी अति सुन्दर व धर्मचारिणी पत्नी को शस्त्र के भय से उसके हवाले करने को तैयार हो गया तो ध्रुवस्वामिनी ने अपने पति का धर्म के लिये त्याग कर दिया और रामगुप्त के छोटे भाई चन्द्रगुप्त द्वितीय से धर्म के अनुसार विवाह किया था। इस राजनीतिक विवाह से पहले भी धुरवस्वामिनी ने रामगुप्त के भीरू बन जाने पर अपने नारी धर्म का पालन करते हुये अपने को नीच कपटी शत्रु को न सौंपकर रामगुप्त से विच्छेद को ही उपयुक्त माना और चन्द्रगुप्त का साथ दिया। इस प्रकार महिलाओं ने धर्म के क्षेत्र में बहुत योगदान दिया।

गुप्त काल में महिलाओं के प्रति पुरूष की दूषित मानसिकता भी जारी रही उसने उसे उपभोग की वस्तु समझा और उसे मन्दिरों में देवदासी के रूप में ढकेल दिया लेकिन महिलाओं ने वहाँ भी अपने को धर्म के कार्य में ही लगा दिया।

इस प्रकार नारी ने अपने स्वाभिमान की रक्षा के साथ-साथ अपने धर्म की रक्षा भी की थी प्राचीन काल में अनेको स्थानों पर पुरूष के साथ सहमरण के विवरण प्राप्त होते है, यह भी एक राजनीतिक कार्य था। एरण अभिलेख जो कि सती प्रथा का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य है एक प्रकार से महिलाओं के राजनीतिक बलिदान का तत्कालीन स्मारक है। गुप्त शासक भानू गुप्त के सेनापति गोपराज की पत्नी ने गोपराज की मृत्यु पर गोपराज के साथ सती हुई थी और अपने पत्नी धर्म को पूरा किया।

गुप्त काल राजनीतिक समन्वय का काल था। इस काल में एक ओर जहाँ पूर्व काल की कुछ राजनीतिक मान्यताएँ और अधिक विकसित हुई वहीं दूसरी ओर कुछ नवीन राजनीतिक मान्यताएँ भी स्थापित हुई गुप्त कालीन समाज में महिलाओं ने बहुत योगदान दिया गुप्त कालीन समाज में महिलाओं ने बहुत योगदान दिया गुप्त कालीन धर्म में पुरूष देवता के साथ कुछ स्त्री देवियाॅ भी जुड़ गई जैसे-शिव.

(ख.) सामाजिक योगदान- गुप्त काल में वैदिक काल की भांति महिलाएँ सामाजिक योगदान में अपना सहयोग करती रही। हांलाकि पुरूष प्रधान समाज में नारियों को द्वितीयक दर्जे का माना जाता रहा है इस युग में भी पुरूषों की दूषित मानसिकता ने महिलाओं के सम्मान व स्वतन्त्रता में कमी ला दी थी किन्तु फिर भी गुप्त कालीन महिलाओं ने अनेक प्रकार से सामाजिक सहयोग दिया। इस काल में कन्याओं ने गृहस्थी के कार्यों में बहुत प्रशिक्षित थी वे नृत्य संगीत कताई-बुनाई का प्रशिक्षण प्राप्त करती थी। कन्या अनेक रूपों में समाज मैं अपना योगदान दे रहीं थी। कन्या अनेक रूपों में समाज में अपना योगदान दे रहीं थीं भगिनी के रूप में वह अपने भाइयों से प्यार पाती थी, कन्याएँ अनेक प्रकार के सामाजिक कार्यों जैसे शिक्षा देना आदि बड़ी निपुणता से करती थी। ब्रहमचारी उससे शिक्षा मांगते थें।

कन्याओं के सामाजिक योगदान को देखते हुये, उसे गृह व समाज में असिमित अधिकार प्राप्त थे धर्मशास्त्रों में यह व्यवस्था की गई है कि यदि पिता की मृत्यु तक कन्या का विवाह नही हुआ है तो पिता की सम्पत्ति में से कन्या के लिये एक भाग निकाल दिया जाना चाहिये और यदि कन्या जीवन भर अविवाहित रहना चाहे तो पिता की सम्पत्ति में से कन्या के भरण-पोषण के लिये धन निकाल दिया जाना चाहिये। ऐसा धर्म शास्त्रों मेंं कन्याओं के सामाजिक योगदान संगीत कताई-बुनाई का प्रशिक्षण दिया जाना कन्याओं की स्वतन्त्रता का घोतक है, इस काल में कन्याएँ किसी भी कार्य में प्रशिक्षित होने के लिये पूर्णतः स्वतन्त्र थी। इस युग में पुत्रियाँ बड़ी योग्य होती थी। इसी कारण कन्याओं के पिता उनके लिये योग्य वर की तलाश करते रहते थें। इसी कारण कन्याएँ उनके पिता द्वारा बड़े लाड प्यार से पाली जाती थी। पिता के संरक्षण में बड़ी होती थी तथा योग्य वर मिलने पर पिता द्वारा ब्याही जाती थी।

(ग.)आर्थिक योगदान- इस काल में वैदिक काल की अपेक्षा नारी की स्वतन्त्रता पर अनेक तरह के प्रतिबन्ध लगाये गये और उसे हीन समझा गया किन्तु नारी ने इस सब के बावजूद अपने कर्म के द्वारा सिद्ध कर दिया कि वह किसी भी प्रकार से पुरूष से हीन नहीं है। नारी ने इस समय भी अनेक प्रकार से आर्थिक योगदान दिया। मनु ने भी नारी को भोजन बनाने, धान कूटने, कृषि कार्य करने व धन के संग्रह व व्यय की अधिकारिणी माना था। मनु जैसे स्मृतिकार ने महिलाओं को धन संग्रह करना व उसको अपने अधिकार में रखने की शक्ति देकर महिलाओं को और सशक्त बनाने का कार्य किया जोकि महिलाओं के गुणी स्वभाव के अनुकूल प्रतीत होता है।

इस प्रकार नारी पर समाज में नियम बनाने वालो ने तो अनेक प्रतिबन्ध लगाये किन्तु नारी के योगदान के सामने ये सारे प्रतिबन्ध किसी काम नहीं और केवल सैद्धांतिक तौरपर ही रहे व्यवहार में किसी काम नहीं आये, परिवार में नारी के आर्थिक सहयोग में किसी काम नहीं आये, परिवार में नारी के आर्थिक सहयोग से खुशी और समृद्धि आई। इस काल खण्ड में कन्याओं ने घर के आर्थिक मामलों में बहुत बड़ा योगदान दिया वैदिक काल ही भांति कन्याओं ने पशु पालन, दुध दुहना, धान कूटना, चक्की चलाना आदि कार्यों के द्वारा परिवार में आर्थिक योगदार दिया इस आर्थिक योगदान में एक भाग निश्चित कर दिया। इस प्रकार कन्याओं ने अपने कर्तव्यों के द्वारा अपने अधिकार को निश्चित किया। अनेक स्मृतिकारों ने कन्याओं के योगदान की प्रशंसा की और इस आर्थिक योगदान के कारण ही स्मृतिकारों ने कन्याओं को सम्पत्ति की अधिकारिणी माना है, बृहस्पति के अनुसार मृत व्यक्ति की सम्पत्ति उसकी पत्नी को प्राप्त होनी चाहिये। और पत्नी के अभाव में कन्या को प्राप्त होनी चाहिये। बृहस्पति ने पत्नी को पति की धनहरी धन प्राप्त करने वाले बतलाया है जिससे पत्नी का परिवार में आर्थिक योगदान स्पष्ट हो जाता है। बृहस्पति के धनहरी शब्द से स्पष्ट हो जाता है कि स्मृतिकाल में नारी का अर्थ पर पूर्ण स्वामित्य प्राप्त था, और नारी को इस योय पाये जाने से ही उसे कानून के बनाने वालों ने ये अधिकार दिया था।

धर्म सूत्रकार पति और पत्नी दोनों को दम्पति कहते है। दम्पति शब्द से पति की सम्पत्ति में पत्नी का हिस्सा निश्चित हो जाता है। सम्पत्ति पर दोनों का बराबर हिस्सा माना गया है पति के परदेश चले जाने पर स्त्रिया अनेक शिल्पों से जैसे- सूत काटकर, सिलाई आदि करके जीविका अर्जित करती थी, और परिवार को आर्थिक योगदान देती थी। पत्नी को उसके आर्थिक योगदान देने के कारण पति की अनुपस्थिति में चल सम्पत्ति से भी धन खर्च करती थी। पत्नी को सह-स्वामित्य का अधिकार इस काल में प्राप्त था। परिवार के मुखिया पुरूष की मृत्यु हो जाने पर उसकी पत्नी व अविवाहित कन्याओं को जो दय प्राप्त होता था उसे वे परिवार के आर्थिक योगदान में लगा दिया करती थी। इसीलिये प्रधान पुरूश के मर जाने पर उसकी सम्पत्ति में से पुत्रों के साथ-साथ उसकी पत्

निष्कर्ष

मानव सभ्यता के पारम्भिक समय में ही स्त्रियां समाज की धुरी रहती हैं महिलाओं ने प्रत्येक काल में समाज में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान दिया है। महिलाओं द्वारा दिये गये इन योगदानों के कारण ही महिलाओं का समाज में उच्च स्थान रहा है, हमारे शोध प्रबन्ध में इस योगदान को प्रत्येक प्रकार से दर्शाया गया है, और इस योगदान द्वारा होने वाली सामाजिक उन्नति पर भी प्रयत्न किया गया है कि महिलाओं ने किस प्रकार समाज के सभी कार्यों में अपना योगदान देकर समाज की उन्नति में कितना योगदान दिया।

इस शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में इतिहास में किये गये महिलाओं के सहयोग को दर्शाया गया है, हमारे भारतवर्ष की प्रचीन सभ्यता हड़प्पा सभ्यता थी जिसमें महिलाओं ने इस सभ्यता के विकाश में महत्वपूर्ण योगदान दिया, इस सभ्यता के विकाश में महत्वपूर्ण योगदान दिया, इस सभ्यता में महिलाओं के योगदान के कारण ही महिला को गृह व परिवार में प्रथम स्थान प्रदान किया गया। इस सभ्यता में मातृदेवी की अधिक मूर्तियां पाई गई हैं जोकि इस काल की महिलाओं की सामाजिक स्थिति को दर्शाती है और समाज में महिलाओं के उच्च योगदान को भी दर्शाती हैं यह सभ्यता प्रारम्भिक नगरीय सभ्यता थी जिसमें जीवन को सुनियोजित ढ़ग से जीने का मार्ग सिखलाया हम इस सभ्यता के आज तक भी ऋणि है, और उससे भी ज्यादा इस काल की महिलाओं के ऋणि है क्योंकि इस सभ्यता में महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान दिया।

इस सभ्यता की महिलाओं ने समाज में अनुक क्षेत्रों में योगदान दिया वह क्षेत्र चाहे राजनीतिक हो या आर्थिक या कला का क्षेत्र हो। इस समय के समाज ने भी महिलाओं को पूर्ण स्वतन्त्रता दी और परिवार में माता का स्थान उच्चतम रखा इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतवर्ष की प्राचीनतम सभ्यता हड़प्पा में महिलाओं ने भरपूर योगदान दिया। नारी की स्वतन्त्रता, उसके कत्र्तव्य व अधिकार एक दूसरे से जुड़े हुये होते है इसीलिये इस सभ्यता ने जब महिलाओं को स्वतन्त्रता, व अधिक अधिकार प्रदान किये तो महिलाओं ने भी अपने कत्र्तव्यों का निर्वाहन पूर्ण रूप से किया समाज ने महिलाओं को यदि सम्मानित किया तो महिलाओं ने भी समाज को अनेक प्रकार से योगदान दिया।

नारी समाज की जननी कहलाती है, समाज, परिवार, घर को बनाने वाली नारी ही होती है नारी के बिना किसी भी समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। समाज सभी प्रकार से महिलाओं का ऋणी होता है।

भारतीय समाज सदैव से ही महिला शक्ति का ऋणी रहा है इस काल के चहुमुखी विकास में नारी का योगदान रहा है, ऋग्वेद में कहा गया है कि जिस प्रकार उषा सभी को सुख देने वाली होती है उसी प्रकार महिलाएँ भी समाज को सुख देने वाली होती है। ऋग्वेद में कहा गया है कि उषा के बिना दिन, सुख व राज्य के कार्य सिद्ध नहीं होने वैसे ही समीचीन महिलाओं के बिना सुख व राज्य के कार्य सिद्ध नहीं होते इस युग में नारी की महत्ता का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उसकी अनुपस्थिति में राज्य के कार्यों में न होने की शंका विद्यमान है। इस प्रकार वैदिक युग में नारी के योगदान को आसानी से समझा जा सकता है।

वैदिक युग में यह धारणा रही कि जिस प्रकार सभी वस्तुएँ विद्यमान तो होती है किन्तु बिना उषा के वे दिखलाई नहीं देती इसी प्रकार जगत में बिना नारी के सभी वस्तुएँ विद्यमान होकर भी दृष्टिवान भी थी ऋग्वेद में कहा गया है कि मनुष्य को चाहिये सब वस्तुओं से सब सुख देने वाले घरों का प्रबन्ध कर और उन्हे सभी सुख देने वाली वस्तुओं से सुशोभित कर घर की महिलाओं को सौंप देना चाहिये।

पाराशर स्मृति में पत्नी को पति की सहधर्मिणी कहा गया है, इस काल में भी महिलाओं के अकेले ही यज्ञानुष्ठान के वर्णन प्राप्त होते है, राम के राज्याभिषेक के समय कौशल्या प्रातः काल में अकेली ही स्वातियोग करने में व्यस्त थी, इस काल में अनेक प्रकार के यज्ञ किये जाते थे जो स्त्रियों द्वारा ही सम्पादित कर लिये जाते थे। इस समय पत्नी राजनीतिक कार्यों की सहायिकी थी। इसी प्रकार कौरव जननी गांधारी भी बहुत ही धर्मशील थी और तेजस्वनी स्त्री थी उसके अपने पुत्र दर्योधन का साथ नही दिया क्योंकि वह जानती थी कि उकसा पुत्र दुर्योधन धर्म के रास्ते पर नहीं चल रहा है, इस काल में गांधारी जैसी महिलाएँ, नारियों के राजनीतिक योगदान की पुष्टि कर देती है।

दानवराज पुलोमा की पुत्री शची अत्यन्त राजनीतिक प्रवृति की कन्या थी इसे मन्त्रोच्चारण में महारथ हासिल थी, इसमें तपश्या से इन्द्र को प्राप्त किया था। मेरूदेवी, मेरू की पुत्री थी, तथा नाभि की पत्नी थी यह बहुत ही राजनीतिक प्रवृति की महिला थी, इस महिला ने अपने गर्भ से विष्णु के अवतार ऋषभदेव को जन्म दिया था। तथा बद्रीनाथ में अपनी पति के साथ तपश्या करके मुक्ति पाई, महाभारत व रामायण जैसे महाकाव्यों में भी नारी का गुणगान किया गया है और कहा गया है कि कोई भी राजनीतिक कार्य बिना स्त्री के पूर्ण नही समझा जायेगा। इस प्रकार महाकाव्य काल में नारी के राजनीतिक योगदान की पुष्टि हो जाती है, महाकाव्य काल में नारियों ने धर्म की रक्षा के लिये महान त्याग किया और धर्म से कभी अलग नहीं हुई।

पुराणों में नारी के स्वतः ही पवित्र होने की शक्ति के बारे में बतलाया गया है अग्निपुराणों के अनुसार ऋतु के पश्चात नारी निर्मल हो जाती है। स्मृति साहित्यों में नारी के सामाजिक योगदान के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है, मनु स्मृति में एक स्थान में कहा गया है 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता'। ब्राहमणों ग्रन्थों में भी महिलाओं के सामाजिक योगदार को देखते हुये उन्हे दाय आदि सम्पत्ति की आधिकारिणी माना गया, इस प्रकार कहा गया है कि पत्नी पति के दाय की उत्तराधिकारिणी होती है।

बौद्ध व जैन साहित्य भी महिलाओं ने सभी क्षेत्रों में योगदान दिया बौद्ध भिखुणी चन्द्रा जिसकी ओजस्वी वाणी त्रिपिटक में उपलब्ध है, चन्द्रा अपने संबंध में एक उदात्त वाणी कहती है अद्यो अमोध था देवी का उपदेश मैं आज तीनों विधाओं की ज्ञाता हूँ, सब चित्तमलों से विमुक्त हूँ ये बौद्ध भिक्षुणी ब्रहमज्ञान से परिपूर्ण थी। मड देश की राजकुमार खेमा एक विदूषी बौद्ध भिभुणी थी। खेमा ने गौतमबुद्ध से प्रवज्या ग्रहण की और बुद्ध ने खेमा को महा प्रज्ञावती की अपाधि से नवाजा था। इसी प्रकार जैन साहित्यों में चन्दना के बारे में बतलाया गया है। जैनों में चन्दना वन्दनीय है, चन्दना को सती कहा गया है, जैन धर्म में प्रसिद्ध सौलह सतियों के कथानक उपलब्ध हैं इनमें चन्दना का भी उल्लेख हैं इन्होने धर्म आदि के कार्य में अनेक प्रकार से योगदान दिया था।

कुमार देवी ने चन्द्र गुप्त प्रथम के साथ संयुक्त रूप से शासन किया था। अमर कोष में भी वेदों में पारंगत महिलाओं का उल्लेख मिलता है, एक स्थान पर वराहमिहिर ने भी लिखा है कि मनुष्य धर्म अर्थ काम के लिये महिला पर ही आश्रित होता है, इस काल में महिलाएँ अपने उत्तर आचरण से पति को प्रसन्न रखने व उसके कल्याण के लिये प्रयत्नशील रही महिलाओं ने पुरूषों की काम वासना को भी नियन्त्रित किया, समाज में माता का स्थान इतना उच्च था कि उसके बिना परिवार अपूर्ण व अधूरा समझा जाता था। माता का उत्तरदायित्व गौरव पूर्ण रहा मातृत्व की सार्थकता वात्सल्य में निहित रहती थी।

इसी प्रकार पूर्व मध्य काल में भी महिलाओं ने सभी क्षेत्रों, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक योगदान दिया उधापि इस समय बाहरी आक्रमणों के कारण महिलाओं की स्वतन्त्रता को प्रतिबन्धित कर दिया गया था किन्तु फिर भी महिलाओं ने अपने योगदान में किसी भी प्रकार से कमी नहीं की, इस समय की पुत्रियाँ माता-पिता की यश वृद्धि के लिये दान दिया करती थी, शंकरगण के सागर शिला लेख से ज्ञान होता है कि पुत्रियाँ विवाहित होने के पश्चात भी माता-पिता को प्यार करती थी। देउक की पत्नी कृष्णा देवी ने अपने माता-पिता के लिये राजनीतिक कृत्य संपन्न किये थे, पुत्री को अनेक प्रकार की शिक्षाएँ प्रदान की जाती थी अनेक ऐसी वीरांनाओं की चर्चा इस युग में की गई है जिन्होने रणक्षेत्र में भी शत्रु या आक्रमण कारी के छक्के छुड़ा दिये थे नायकी देवी ने मुहम्मद गोरी को गुजरात में युद्ध में परास्त किया। पिता के हार में ही पूर्ण व्यवहारिक शिक्षा दे दी जाती थी। कन्नौज के शासक गोविन्द चन्द की पत्नी कुमार देवी पति के ब्रहमण धर्म को अस्वीकार कर बौद्ध हो गई थी इससे इस काल में नारियों की राजनीतिक स्वतन्त्रता व उनके राजनीतिक योगदान के बारे में जानकारी मिलती है। महिलाओं को इस काल में भी घर का वार्षिक आर्थिक ब्यौरा रखने की शिक्षा दी जाती थी। इस प्रकार घर के आर्थिक क्रिया कलापों पर महिलाओं का ही अधिकार सिद्ध होता है, इस काल में भी पुत्रों ने माता का सम्मान किया, हर्षवर्धन के ताम्रपत्र लेख में पिता प्रभाकर वर्धन के साथ माता राहल्न देवी का उल्लेख मिलता है। इस समय की गणिकाओं ने भी सामाजिक योगदान दिया, कुछ गणिकाओं का रहन-सहन तो सामन्तों जैसा था। ये नगर के एक वृहद भाग में रहकर व्यवसाय करती थी। दशकुमार चरित में वर्णित वसन्त सेना उच्च चरित्र की गणिका थी। राग मंजरी ने वेश्या जनोचित धर्म का परित्याग कर समाज में सम्मान प्राप्त किया था।

इस युग की दासियों ने भी सभी क्षेत्रों में योगदान दिया दासियाँ, रानियों और राजकन्याओं के साथ रहकर उनकी सेवाए करती थी।

इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि महिलाएँ इस युग में भी सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक कार्यों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रही थी हालांकि इस युग में महिलाओं की स्वतन्त्रता पर काफी प्रतिबन्ध लगा दिये गये थे किन्तु फिर भी महिलाओं ने अपने प्रतिभा से। चाहे वे जिस रूप में भी हों सभी रूपों में समाज को अपना योगदान दिया था। इस प्रकार प्राचीन काल में महिलाओं द्वारा दिये गये योगदान से समाज उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हुआ था। इसके बावजूद समाज ने महिलाओं के साथ उनके गुण के सम्मत व्यवहार नहीं किया, वैदिक काल से लेकर कमी की गई, उन्हें अनेक प्रकार से प्रतिबन्धित किया गया, इसलियें पूर्व-मध्य काल में नारी के योगदान तो अवश्य रहा किन्तु वैदिक काल के योगदान से कुछ खास अवश्य हुआ। मेरे शोध प्रबन्ध में तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि समाज यदि महिलाओं को पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान करे तो महिलाओं का योगदान श्रेष्ठ कोटि पर आ जायेगा, आधुनिक काल में भले ही नारी स्वतन्त्र है किन्तु समाज में अनेक कुरीतियां और दूषित मानसिकता के कारण अभी समाज महिलाओं के प्रति पूर्ण आस्थावान नहीं दिखाई पड़ता, यह समाज का दुर्भाग्य है। किन्तु फिर भी महिलाओं से प्रार्थना की जा सकती है-

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास-रजत-नग पगतल में।
पीयूष श्रोत सी बहा करों,
जीवन के सुन्दर समतल में

धन्यवाद